

तारांगण



TAARANGAN



बैंक ऑफ़ इंडिया की तिमाही गृहपत्रिका जून-सितंबर, 2024 (संयुक्तक)

Bank of India's Quarterly House Journal June-Sept, 2024 (Combined Issue)



6 Innovations in Digital Lending



बैंकिंग का डिजिटल रूपांतरण..... 12

The New JAM-UPI-ULI Trinity Revolutionizing India's Digital Public Infrastructure..... 15

उच्च तकनीक कृषि – अवसर एवं चुनौतियाँ 18

7 Steps to Achieve Mental Wellness Pause, Breathe, Focus, Walk, Read, Eat & Sleep Well . 22

The Imperative of Climate Action at COP29..... 33

20

गणेशा - दि मैनेजमेंट गुरु



Save Water Save Planet

24



मन का मर्म

41



The Importance of Hindi and Local Languages in Indian Banking and Its Reach in Remote Areas.....35

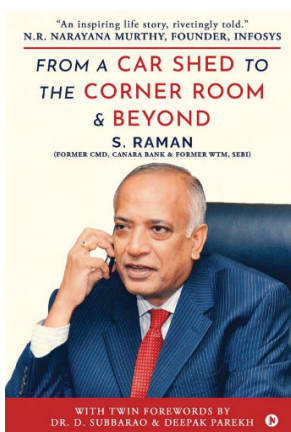
आस्ति गुणवत्ता के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) .. 37

शाखा बैंकिंग बनाम आभासी बैंकिंग 44

अर्थव्यवस्था के आस्था केंद्र - बैंक 52

A Banker story that is bound to inspire Millions

49



भारत सरकार का उपक्रम (A Government of India undertaking)

बैंक ऑफ इंडिया की द्विभाषी तिमाही गृहपत्रिका

A Quarterly Bilingual House Journal of Bank of India

अंक: जून-सितंबर 2024 (संयुक्तंक)

Issue: June-Sept. 2024 (Combined Issue)

संरक्षक / Patron

रजनीश कर्नाटक

प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

Rajneesh Karnatak

MD & CEO

संपादकीय मंडल / Editorial Board

ए.के. पाठक

मुख्य महाप्रबंधक

A. K. Pathak

Chief General Manager

बी.एस. फोनिया

उप महाप्रबंधक

B.S. Fonia

DGM HR

मऊ मैत्रा

संपादक

Mou Maitra

Editor

अमरीश कुमार

सह-संपादक

Amrish Kumar

Co-Editor

Back Cover

Painting by - Madhuri R

Manager, SKVK Navanagar,

Hubballi Dharwad Zone

यह आवश्यक नहीं कि पत्रिका में छपे
लेखों में व्यक्त विचार बैंक के हों ।

Printed, Published and Edited by

Mou Maitra on behalf of Bank of India,

Published from Head Office :

Star House, G-5, 'G' Block,

Bandra Kurla Complex, Bandra (E),

Mumbai - 400 051 and printed at

PRINT PLUS PVT. LTD.,

212, Swastik Chambers, S.T. Road,

Chumbur, Mumbai 400071

Photo Credit : pixabay.com

प्रबंध निदेशक एवं सीईओ / MD & CEO



प्रिय साथियो,

तारागण के इस संयुक्तांक के माध्यम से आप सभी से पुनः संवाद करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। जैसा कि आपको विदित है हम वित्तीय वर्ष 2025 की तीसरी तिमाही में प्रवेश कर रहे हैं, मैं आश्चर्य हूँ कि आप में से हरेक ने वित्तीय वर्ष 2025 की दूसरी तिमाही के वित्तीय परिणामों को देखा होगा, जो हमारे निरंतर प्रगति का प्रमाण है। इस तिमाही के दौरान अपने बैंक के 119वें स्थापना दिवस को हमने अपनी समृद्ध ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया तथा संस्थान की नींव को मजबूत करते हुए बैंक के कुल कारोबार को 13.97 लाख करोड़ की नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। बैंक ने सभी प्रमुख क्षेत्रों में शानदार प्रदर्शन किया है। मैं आपकी कड़ी मेहनत, समर्पण और उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता की सराहना करता हूँ।

वर्तमान वैश्विक एवं घरेलू आर्थिक परिदृश्यों में, हमें प्रमुख कारकों पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है जैसे कम लागत वाले जमा संग्रहण, क्रेडिट वृद्धि को बनाए रखना है, आस्ति गुणवत्ता बनाए रखना और अधिक से अधिक एनपीए वसूली करना ताकि हम वित्तीय वर्ष 2025 में बेहतर परिणाम हासिल कर सकें। इसके साथ ही अपने डिजिटल उत्पादों को निरंतर प्रोत्साहित करने पर जोर देना है ताकि फील्ड स्टाफ को भी सुविधा हो और ग्राहक भी सहजता के साथ बैंकिंग अनुभवों का आनंद ले सकें। डिजिटल समाधान, प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित बनाते हैं और तकनीकी जटिलताओं को घटाते हैं जिससे फील्ड में कार्यरत स्टाफ कारोबार सृजन में और अधिक ध्यानकेंद्रित कर पाते हैं। मानव संसाधन में भी अपेक्षित सुधारात्मक बदलावों को गति देते हुए अपनी क्षमताओं को बढ़ाने के लिए “स्टार लाइट” अभियान को क्रमबद्ध तरीके से शुरू किया है।

तारागण के सूचनाप्रद लेख हमें उद्योग की जानकारी एवं फील्ड के पेशेवर अनुभव के बारे में अपडेट रखते हैं। इसलिए आप सभी बैंक की पत्रिकाओं को नियमित रूप से पढ़ें और उनमें अपनी सीख एवं अनुभवों को लेखों के माध्यम से साझा भी करें ताकि हम सभी एक दूसरे की विशेषज्ञता से लाभान्वित हो सकें। आइए, हम सब मिलकर बैंक की उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन की दिशा में नए कीर्तिमान स्थापित करने हेतु प्रयास करें।

शुभकामनाओं सहित,

Dear Colleagues,

I am delighted to reconnect with you all through this special combined issue of "Taarangan". As we are approaching Q3FY'25, I am sure that each one of you must have gone through the financial results of our bank for Q2FY'25, which reflects our continued progress. During the quarter, as we celebrated the 119th Foundation Day of our bank, we took a moment to reflect upon our rich historical background and reinforced our commitment for stronger foundation, propelling our Business Mix to new heights of Rs. 13.97 lakh crore. The bank is performing well across all key parameters. I extend my hearty congratulations to each one of you for your hard work, dedication, and commitment for excellence.

In the current global and domestic economic environment, it is crucial for us to remain focused on key priorities such as Low-cost deposit mobilisation, sustainable credit growth, maintaining Asset Quality and maximisation of NPA Recovery to ensure, we close the FY'25 with stronger results. At the same time, we should continue promoting our digital products to provide both convenience for our field staff and a seamless banking experience to our customers. Digital solutions can streamline processes, reduce technical complexities, and allow staff to concentrate more on business generation. In the area of human resources, phase wise implementation of the 'Star Light' Project is underway to accelerate the necessary reforms and enhance our capabilities.

The informative articles in Taarangan are valuable resources for keeping us informed about industry trends and the professional experiences of our field staff. I encourage you to read these magazines regularly and share your own experiences and insights by contributing articles. By doing so, we can ensure that everyone benefits from each other's knowledge and expertise. Let's continue to work together towards a greater success.

With Best Wishes,

(रजनीश कर्नाटक)/(Rajneesh Karnatak)

तारागण / जून-सितंबर, 2024 / 4

संपादकीय / Editorial



प्रिय पाठकों,

तारांगण का यह संयुक्तांक आपको समर्पित करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। पिछली दो तिमाहियों की अवधि के दौरान हम सभी अनेक उत्सवों एवं उपलब्धियों के साक्षी रहे हैं। मननीय प्रबंध निदेशक एवं सीईओ महोदय ने अपने संदेश के माध्यम से हमें बैंक की उपलब्धियों के बारे में अवगत कराया एवं भविष्य में और बेहतर कार्यनिष्पादन करने के लिए प्रेरित किया है। हमारे बैंक ने राष्ट्र की सेवा में 118 वर्षों की यात्रा पूरी कर ली है। 7 सितंबर 2024 को हमने अपने बैंक के 119वें स्थापना दिवस को हर्षोल्लास के साथ मनाया। इस अंक में मौजूदा वित्तीय वर्ष की पहली छमाही के दौरान बैंक में आयोजित गतिविधियों को समाहित किया गया है।

पत्रिका में आपके द्वारा भेजे गए लेखों और कविताओं की भूमि का अतुलनीय है। इसके प्रकाशन में आपकी रचनात्मकता और गुणवत्तापूर्ण लेखन का योगदान महत्वपूर्ण है। तारांगण में प्रकाशित साहित्य यह प्रमाणित करता है कि हमारे बैंक के स्टाफ सदस्य सृजनशील एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। मानव संसाधन की गुणवत्ता की दृष्टि से हमारे बैंक के लिए यह गर्व की बात है। आपकी रचनात्मकता एवं पठन रुचि से संपादकीय टीम का भी उत्साहवर्धन होता है। पत्रिका के इस अंक में बैंकिंग क्षेत्र में हो रहे परिवर्तनों से आगाह कराने वाले लेखों सहित जीवन के अन्य विविध पहलुओं पर लिखे लेखों को भी समाहित किया गया है। पत्रिका की विषयवस्तु को रोचक बनाने के लिए कविताओं को भी जगह दी गई है। सभी लेखों एवं कविताओं में रचनाकारों का शोधश्रम एवं अनुभवजन्य लेखन प्रत्यक्ष एवं सराहनीय है।

संपादक के तौर पर मैं उम्मीद करती हूँ कि सभी पाठकों को 'तारांगण' का यह अंक सूचनाप्रद एवं आकर्षक लगेगा। आपकी प्रतिक्रियाएं हमें बेहतर संपादन के लिए प्रेरित करते हुए, भावी अंकों की गुणवत्ता में सुधार सुनिश्चित करती हैं।

शुभकामनाओं सहित,

Dear Readers,

It is my great pleasure to dedicate this joint issue of Taarangan to all of you. Over the past two quarters, we have witnessed numerous celebrations and achievements. In his message, our Honourable MD & CEO highlighted the bank's milestones and inspired us to aim for even greater success in the future. This year, we proudly mark the completion of 118 years of service to the nation. On 7th September 2024, we celebrated the 119th Foundation Day of our bank with great enthusiasm. This issue of Taarangan reflects the activities that took place during the first half of this financial year.

The articles and poems contributed by you have been truly remarkable. Your creative and qualitative input has played an invaluable role in this publication. The content featured in Taarangan showcases the creativity and diverse talents of our staff, which is a point of pride for our institution. It is a testament to the exceptional quality of our human resources. Your passion for creativity and reading continues to inspire and motivate the editorial team. In this issue, we have included articles on a variety of topics, ranging from different aspects of life to developments in the banking sector. We have also featured poems to add a touch of creativity to the magazine. The research and empirical insights in these contributions are truly commendable.

As the editor, I sincerely hope that you find this issue of Taarangan both informative and engaging. Your valuable feedback continues to inspire us to improve the magazine, ensuring we deliver even better quality in future editions.

With best wishes,

(मऊ मैत्रा) / (Mou Maitra)

Innovations in Digital Lending



Introduction

India is home to the second largest telecom subscriber base and internet user base globally. From mobile banking and digital payments to AI-based lending and blockchain advancements, the FinTech landscape is continuously adapting to the varied needs of our expanding economy. The Global FinTech sector is currently generating revenue of \$245 billion dollars and is projected to reach \$1.5 trillion by year 2030. Digital technologies have played a crucial role in enhancing financial inclusion, boosting efficiency, and providing real-time services nationwide. The collaboration among policymakers, regulators, and innovators has been pivotal in shaping India's FinTech progress, with success stories such as Aadhar, UPI, and DigiLocker stemming from these joint efforts. In 2024, there are 1.38 billion Aadhar ID holders covering 98 per cent of the population. India has 424 million unique Unified Payment Interface (UPI) users in June 2024. DigiLocker, the cloud-based document storage platform, has issued over six billion documents and serves 300 million users as of 2024.

The JAM (Jan Dhan, Aadhar, and Mobile) trinity is a tool designed to facilitate the direct transfer of

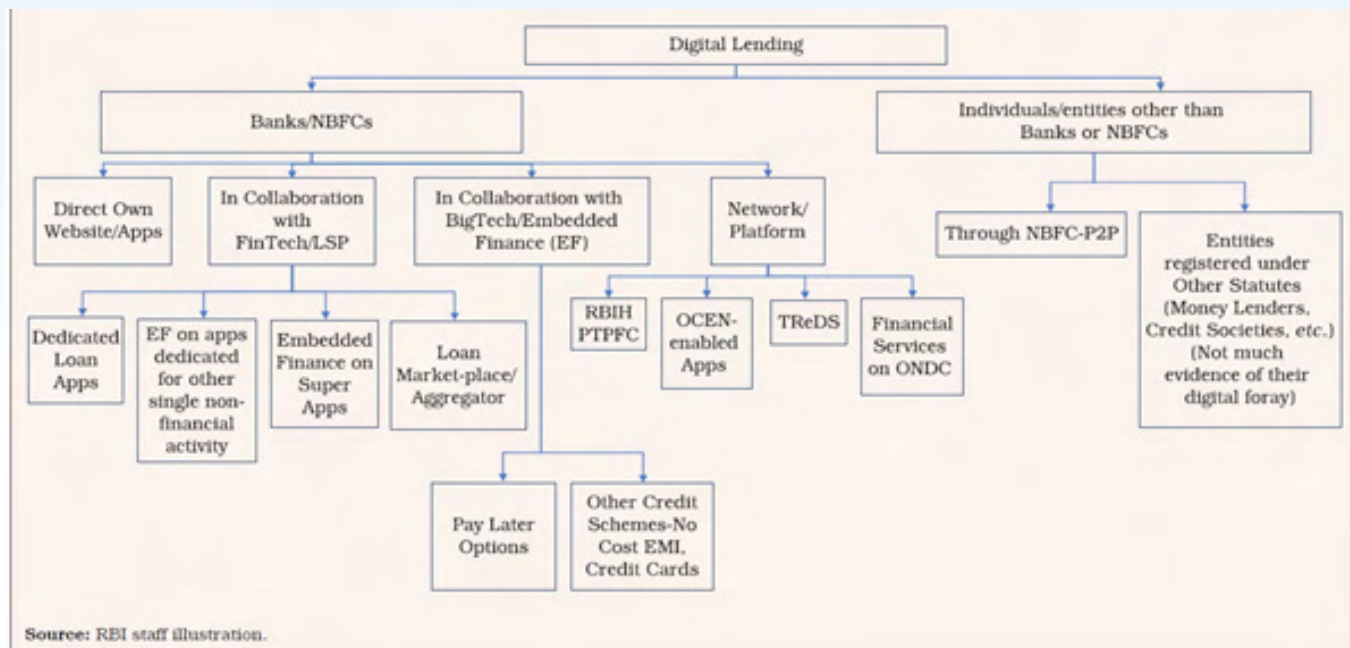
cash benefits into beneficiaries' bank accounts by the government. The regulatory sandbox model of RBI has fostered innovative solutions across various areas, including retail payments, cross-border transactions, MSME lending, and the prevention of financial fraud.

What is Digital Lending

Digital lending refers to an automated and remote lending process that leverages advanced digital technologies for various stages, including customer acquisition, credit assessment, loan approval, disbursement, and recovery. Key features that distinguish digital lending from traditional methods include its speed, automation, and the ability to operate without physical interactions. As of late December 2020, digital lending accounted for only 2% of the total disbursed amount among surveyed banks, which together represent 75% of the overall banking sector. Many Scheduled Commercial Banks (SCBs) are increasingly digitizing their retail offerings, particularly personal and MSME loans, with data showing that about 40% of personal loans processed by five leading SCBs in 2022-23 were handled entirely digitally. In the non-banking

financial sector, surveyed NBFCs reported that digital lending made up 11.4% of their total lending activities, indicating a growing trend in this area. BigTech platforms are also significantly contributing to digital lending through various credit options for purchasing consumer durables, including credit cards, UPI-linked credit lines, and pay-later schemes.

Digital Lending Ecosystem in India



Digital Lending Innovations in India

Recognizing the potential of the FinTech ecosystem as a significant growth driver, the Reserve Bank of India has implemented several measures to promote innovation. These include the issuance of guidelines for Account Aggregators (AAs) in 2016 and the establishment of regulations for P2P lending in 2017. These actions demonstrate the Reserve Bank's commitment to fostering a supportive environment for the sector's growth in India. Both the Government of India and the Reserve Bank have played pivotal roles in building trust in platform-based lending by ensuring proper regulatory frameworks are in place.

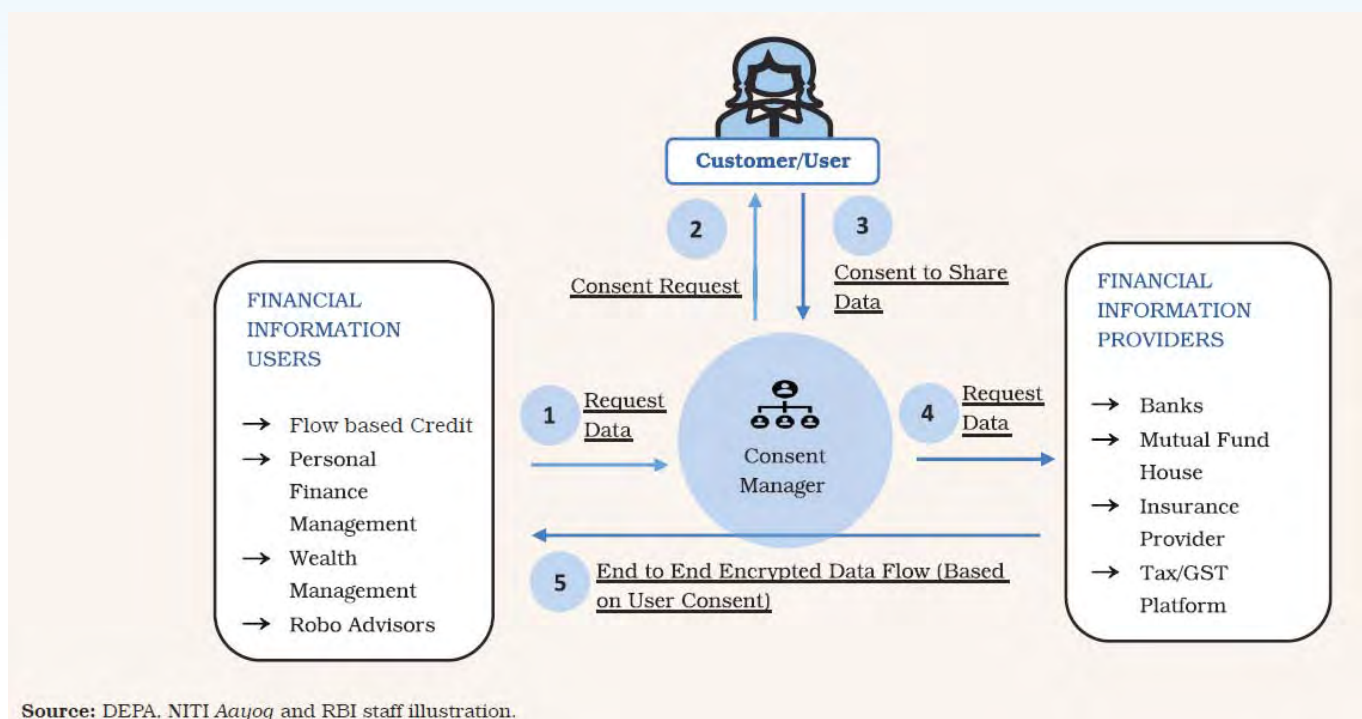
Account Aggregators (AA)

It is a standardized, consent-based, and interoperable platform that enables individuals, businesses, and government agencies to securely share and access data for various purposes. Account Aggregators (AAs) provide a technology-driven interface using standardized application programming interfaces (APIs) to manage customer consent and authentication, facilitating the sharing of selected financial information. AAs solve the problem of non-standardized, bank-specific APIs that are difficult for third-party applications to integrate, thereby breaking down data silos within the financial sector.

AAs utilize the Data Empowerment and Protection Architecture (DEPA), functioning as consent managers to allow seamless sharing of individuals' financial data with third-party institutions. With the consent of consumers, financial information from accounts held with banks, NBFCs, mutual funds, insurance companies, and other Financial Information Providers (FIPs) is digitally shared with Financial Information Users (FIUs) who offer

services like loans or insurance. Since its launch in August 2021, AAs have benefited nearly 80 million individuals and companies by simplifying access to financial services, with around 40 million new accounts linked in 2024 alone. The inclusion of regional rural banks (RRBs) into the AA system is also expected to boost bank credit flow to the rural economy.

Flow of Water under AA



Trade Receivables Discounting System (TReDS)

TReDS, supported by the Reserve Bank, aims to tackle the working capital and cash flow issues that MSMEs encounter due to delayed payments. This financing framework utilizes technology to facilitate the discounting of bills and invoices. At present, four entities operate as TReDS platforms, and they have seen consistent growth in both transaction volume and value.

Open Credit Enablement Network (OCEN)

The Government of India has introduced the OCEN to democratize credit and enhance financial inclusion down to the grassroots level. This framework consists of APIs that connect lenders, account aggregators, loan agents, collection and disbursement partners, and data providers. Launched in 2020, it operates on the Government E-Marketplace (GeM) Sahay and GST Sahay

platforms. The framework has since been upgraded to OCEN 4.0, with several banks now publishing their white-label applications in its registry. It aims to assist micro, small, and medium enterprises (MSMEs) and small businesses in India that struggle to access formal credit due to inconsistent business performance.

Multiple cash flow-based lending platforms, such as GeM Sahay and GST Sahay, have been developed under the OCEN framework. The GeM Sahay app provides unsecured short-term loans to sellers on the Government e-Marketplace with disbursements totalling around ₹23 crore to date. As of May 2024, the platform included four banks and seven non-banking financial companies (NBFCs) as banking partners. The GST Sahay app, developed under the Reserve Bank's Regulatory Sandbox, utilizes the OCEN and Account Aggregator frameworks to offer on-demand, real-time, contactless cash flow-based financing to micro enterprises.

Additionally, the OCEN framework enables lenders in remote areas to issue loans by leveraging consented data access from various sources. It has been effectively used to provide small-term loans (60-90 days repayment) ranging from ₹168 to ₹10 lakhs, making them viable for lenders due to reduced processing and collection costs. The OCEN facilitates loan agents in offering embedded finance solutions, allowing borrowers to access competitive, customized credit products through their preferred applications. Lenders benefit from minimal customer acquisition costs, the opportunity to serve more clients, and simplified monitoring of borrower activities. Overall, the OCEN empowers banks, NBFCs, loan agents, and technology service providers to create innovative financial products tailored to the diverse needs of small businesses,

while reducing the costs associated with acquiring, underwriting, processing, disbursing, and complying with regulations related to loans.

Public Tech Platform for Frictionless Credit

In a significant move towards enhancing digital financial inclusion in India by making credit affordable, the Reserve Bank introduced the Public Tech Platform for Frictionless Credit (PTPFC). Developed by the Reserve Bank Innovation Hub (RBIH), this platform which can be used by banking and non-banking financial institutions, fintech companies, data aggregators and other innovators utilizes open APIs and standards to facilitate seamless data availability in a 'plug and play' model, allowing for smooth credit disbursement. This model helps in building innovative credit products and services. By reducing operational costs for lenders through easier data access, the PTPFC aims to enable them to provide credit at more affordable rates.

Launched in 2023, the PTPFC pilot focused on various products, including fully digital Kisan Credit Card (KCC) loans of up to ₹1.6 lakh per borrower, as well as loans for dairy, MSMEs, personal needs, vehicles, tractors, digital gold, and homes through participating banks. Initial results from the KCC pilot were promising, as it allowed for the doorstep delivery of loans without the need for paperwork. Thanks to the fully digital processing, the turnaround time for KCC loans has been significantly reduced from several weeks to under an hour. In 2023, the RBI announced the establishment of this platform, now referred to as the ULI.

What is Unified Lending Interface (ULI)

The Unified Lending Interface (ULI) is a technology platform designed to facilitate frictionless credit access and is poised for a nationwide launch

following its pilot phase. Similar to the Unified Payments Interface (UPI), which transformed India's retail payment system, ULI aims to reshape the lending landscape. This initiative aligns with India's broader digital banking strategy, alongside existing frameworks like JAM and UPI.

For example, when a dairy farmer seeks a loan, the lender can access various data points from the milk cooperative, such as cash flow, land ownership status from state records, and financial insights based on farming practices. With ULI, lenders can quickly assess the loan applicant's income and credit eligibility, allowing for automated decision-making and enabling loan approvals and disbursements within minutes. This streamlined process significantly enhances the efficiency of credit delivery.

The ULI platform aims to reduce the lengthy credit appraisal times typical of traditional lending by providing digital access to both financial and non-financial data. This allows borrowers to obtain credit more swiftly and with less documentation. By digitizing access to customer data, the ULI seeks to minimize paperwork and waiting times, making the loan application process smoother and faster. The platform is designed to meet the substantial unmet credit demand across various sectors, especially for agricultural and MSME borrowers with lower borrowing costs. By integrating diverse data sources like bank statement, ITR returns, GST data, credit history and scores etc and utilizing advanced technologies like machine learning, ULI promises a more comprehensive and inclusive approach to credit assessments, reducing dependence on informal sources of credit, promoting financial inclusion and stability in the economy.

Furthermore, ULI is expected to promote greater financial inclusion by expanding credit access to

rural and underserved communities—a key policy objective of the Indian government. In addition to enhancing efficiency, ULI is likely to create a more competitive lending environment, allowing borrowers to easily compare loan products and enabling lenders to reach a wider customer base. As a result, loan approvals could be completed in just a few hours or even less. The ULI will also accelerate business loans for small and medium enterprises (SMEs) by integrating data from GST networks and, in some regions, digitized land records, thereby streamlining the loan application process.

Conclusion

Initiatives like the Account Aggregator framework, Unified Lending Interface (ULI), and Open Credit Enablement Network (OCEN) are expected to enhance financial accessibility, with data analytics and AI facilitating personalized and efficient solutions. They are poised to transform the financial sector by facilitating customized and diverse financial products, including cash flow-based lending and invoice financing. AI algorithms are already being utilized for fraud detection and credit scoring, employing predictive analytics to evaluate creditworthiness and broaden access to credit. Additionally, AI-driven chatbots and virtual assistants are improving customer service by providing tailored recommendations and prompt query resolutions.

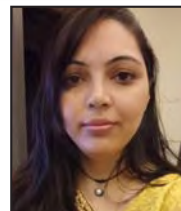
However, such innovations can bring significant challenges, particularly regarding data privacy due to the management of large volumes of personal information. Cybersecurity is also essential for protecting India's digital financial ecosystem and ensuring systemic stability. As more financial transactions move online, the risks continue to

grow significantly. Ethical governance of AI is crucial to ensure fairness and prevent bias. AI can also be misused to spread misinformation, potentially disrupting digital payment infrastructures and harming the reputation of financial institutions. For effectively harnessing new technologies, stakeholders must remain aware of these risks. Key considerations include ensuring the authenticity of training data, understanding the implications of AI in critical financial decisions, and clearly defining liabilities for its use.

The Digital Personal Data Protection (DPDP) Act of 2023 marks a significant step in safeguarding personal data, emphasizing data minimization and empowering individuals to control their information. Furthermore, the Government of India's Guidelines for Prevention and Regulation of Dark Patterns address unfair practices in the digital space. Banks and FinTech NBFCs should prioritize a customer-focused strategy, establish strong security protocols, provide clear financial products, and uphold fair lending practices. Decisions made

by algorithms must be equitable and free from bias, ensuring that all customers are treated fairly. To mitigate technology-related risks, it is essential to invest in robust IT infrastructure and maintain ongoing monitoring to safeguard against cyber threats and technical malfunctions. To address concerns about data misuse, the Reserve Bank has enforced data localization for payment information and established guidelines that restrict digital lending applications from accessing personal data without users' explicit consent. The 'new trinity' of JAM-UPI-ULI represents a significant advancement in India's digital infrastructure, aiming to transform credit access for small businesses and individuals. The new buzzword here is "Democratization of Credit".

Deepika Ramnani
Manager
Pune Zone



बैंकिंग का डिजिटल रूपांतरण

विद्वानों का मत है कि डिजिटलीकरण मात्र तकनीकी उन्नयन से बढ़कर सामाजिक अंतर-संबंधों को प्रगाढ़ करने का माध्यम भी साबित हुआ है। सत्य नडेला का मत है कि आज के युग में सभी कंपनियाँ सॉफ्टवेयर कंपनियाँ हैं और सभी कंपनियों को अब डिजिटल कंपनियों की तरह परिचालन एवं चिंतन करना होगा क्योंकि व्यवसाय के आधुनिक युग में अस्तित्व बनाए रखने के लिए डिजिटल रूपांतरण अनिवार्यता बन गया है। डिजिटलीकरण के समर्थन में बिल गेट्स का भी मानना है कि आईटी और कारोबार यौगिक तत्वों की तरह एक दूसरे के पूरक हो चुके हैं। इसलिए जो व्यवसाय बदलते परिवेश के अनुसार नवोदित पद्धतियों को अपनाने से हिचकेगा, उसकी इतिहास के पन्नों में खो जाने की संभावना बढ़ जाएगी। अक्सर प्रयास करने के दौरान हुई गलतियों के मुकाबले अकर्मण्यता अधिक महंगी साबित होती है। न केवल कारोबारी जगत में अपितु हमारे सामाजिक जीवन के पहलुओं को भी डिजिटल क्रांति ने रूपांतरित कर दिया है। किसी शायर की पंक्तियाँ हैं:

“कर दिया इजहार-ए-इश्क हमने टेलीफोन पर,

लाख रुपए की बात थी, दो रुपए में हो गई।”

प्रेमपत्रों से चलन शुरू होकर टेलीफोन तक पहुंचा और आज के दौर में स्मार्टफोन और इंटरनेट की सहज उपलब्धता के कारण हमारी अभिव्यक्तियों की नित नई परिभाषा लिखी जा रही है। बीते वर्षों में तकनीक के क्षेत्र में भारत ने अनेक उपलब्धियाँ हासिल की और विश्व के शीर्ष देशों में अपना स्थान बनाया है। डिजिटलीकरण के दौर में, तकनीक ने हर क्षेत्र को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है जिसमें बैंकिंग अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक दौर था जब गांव मोहल्ले के चाचाओं के पास पैसा भेजने के नाम पर एक ही

सुविधा थी, मनी ऑर्डर, जोकि डाक विभाग द्वारा संचालित थी। पैसे भेजने और प्राप्त करने के बीच कितना समय लगेगा इसकी कोई निश्चित समय सीमा नहीं थी, क्योंकि तकनीक एवं साधन उतने उन्नत नहीं थे। जैसे-जैसे समय बीता, तकनीक उन्नत होती गई और फिर दौर आया कोर बैंकिंग सिस्टम का, जिसने देश-परदेस की सीमाओं को मिटा कर धन-प्रेषण को आसान बनाया।

डिजिटलीकरण ने हमारी दैनिक आवश्यकताओं को सरल बनाने के साथ-साथ समाज में भी सकारात्मक बदलावों को गति दी है, उदाहरण के लिए बैंकिंग के डिजिटल रूपांतरण से समाज में अपराधों पर अंकुश लगा है, अगर यह समझने का प्रयास करें तो स्पष्ट है कि यदि आप डिजिटल बैंकिंग उपभोक्ता हैं, तो आपकी अधिक से अधिक पेमेंट्स ऑनलाइन माध्यम से होगी एवं ऐसी स्थिति में, आपको जेब में कम से कम नकदी रखने की आवश्यकता होगी तो आपके साथ जेबकतरी या लूटपाट की संभावना न्यूनतम हो जाती है, क्योंकि अधिकतर घटनाओं में आपके पास नकद धन होगा ही नहीं, जो इस प्रकार की घटनाओं की प्रमुख वजह होता है। इसीलिए बैंकिंग में डिजिटलीकरण इस दौर में अपराधों की गति पर अवरोध उत्पन्न करने का सशक्त माध्यम भी साबित हो रहा है।

बैंकिंग के डिजिटलीकरण से हुए रूपांतरण में, कुछ नए अपराधों का उद्भव जरूर हुआ है लेकिन डिजिटल धोखाधड़ी के इन मामलों में अपराध की प्रकृति केवल दीवानी प्रकार की होती है, मारपीट, छीनाझपटी जैसी फौजदारी घटनाएं नहीं होती। ऑनलाइन फ्राँड की घटनाओं को कम करने के लिए भी डिजिटल तंत्र को दुरुस्त करने और उपयोगकर्ताओं को जागरूक करने की मुहिम जारी है। आरबीआई के निर्देशानुसार ट्रांजेक्शन पेमेंट ऐप्स ने अपने सुरक्षा चक्र में ऐसे परिवर्तन किए

हैं कि यदि कोई धोखाधड़ी का माध्यम बनने वाला ऐप आपके डिवाइस में इंस्टॉल है तो कोई भी बैंकिंग ट्रांसफर ऐप किसी भी स्थिति में नहीं खुल पाएगी एवं आपका बैंक खाता एवं आपकी जमापूंजी सुरक्षित रहेगी। इन सुरक्षा तंत्रों को मजबूत करने पर निरंतर और भी कार्य किया जा रहा है। नवीनतम तकनीकों ने बैंकिंग के क्षेत्र में क्रांति ला दी है। भारत में बैंकिंग क्षेत्र का डिजिटल परिवर्तन टेलीबैंकिंग, ऑनलाइन-बैंकिंग, डिजिटल बैंकिंग आदि के समानार्थी है। इस सदी के शुरुआती दौर में शुरू होने वाली डिजिटल क्रांति ने बैंकों के साथ-साथ ग्राहकों की समस्याओं को दूर करने पर ध्यान केंद्रित किया है।

आज के समय में बैंकिंग व्यवहार और उपभोक्ताओं की अपेक्षाओं में तेजी से परिवर्तन हो रहा है। अब परंपरागत बैंकिंग का दौर खत्म हो चुका है और बैंकलेस बैंकिंग की अवधारणा मजबूत हुई है। आज, तकनीक ने बैंकों के स्वरूप को एकदम बदलकर रख दिया है। इसमें बिग डेटा, क्लाउड कंप्यूटिंग, स्मार्टफोन और ऐसे अन्य नवाचार शामिल हैं। मोबाइल बैंकिंग के आने से तो ग्राहकों और बैंक के बीच संवाद के तरीके में बहुत बदलाव आ गया है। मोबाइल बैंकिंग के द्वारा घर से दूर रहकर भी अपने बैंक के खातों की जानकारी ली जा सकती है। किसी भी समय खाते से पैसे को ट्रांसफर करना, बिलों का भुगतान इत्यादि किया जा सकता है। यह सुविधा 24 घंटे उपलब्ध होती है। इसी प्रकार एटीएम मशीनों ने बैंकिंग व्यवस्था को बहुत हद तक सरल, सुरक्षित और सुविधाजनक बना दिया है। किसी कवि ने लिखा है-

“अलमारी में कैद होकर रह गए हरफ-ए-किताब,

डिजिटल जमाने में सफ़हे पलटता कौन है।”

कैशलेस अर्थव्यवस्था ने बैंकिंग स्वरूप में और बड़ा परिवर्तन किया है। इससे एक ओर जहाँ लोगों को लंबी कतारों से मुक्ति के साथ-साथ समय की बचत हुई तो वहीं दूसरी ओर कालेधन की समस्या को रोकने में बहुत हद तक मदद भी मिली है। इसके कारण अर्थव्यवस्था में पारदर्शिता बढ़ी है। कैशलेस व्यवस्था आने के कारण रुपया लोगों के पास से तो हटा ही किन्तु उसका स्थान प्लास्टिक मुद्रा ने लिया।

प्लास्टिक मुद्रा ने लोगों की समस्या के समाधान के साथ-साथ पर्यावरण को तो लाभ पहुँचाया ही इसके साथ ही साथ इससे अर्थव्यवस्था में तेजी भी आयी। कैशलेस अर्थव्यवस्था को पेमेंट्स बैंकों ने भी आगे बढ़ाने में मदद की है। लिहाजा समाज के हाशिये पर बैठे व्यक्तियों को आर्थिक विकास की मुख्य धारा से जोड़ने के लिये बैंकों ने समुचित प्रयास किया है। इस प्रयास में माइक्रो यूनिट्स डेवलपमेंट एंड रीफाइनंस एजेंसी लिमिटेड बैंक यानि मुद्रा बैंक का गठन भी बहुत महत्त्व रखता है। यह सूक्ष्म इकाइयों के विकास तथा पुनर्वित्तपोषण से संबंधित गतिविधियों के लिये भारत सरकार द्वारा गठित एक नई संस्था है। इसी प्रकार स्वयं सहायता समूह भी वित्तीय समावेशन की प्रक्रिया को मजबूत करते हैं। कोविड 19 महामारी के बाद कोरोना वायरस के संक्रमण की रोकथाम के लिए आरबीआई ने भी सभी बैंकिंग यूजर्स को नोटिफिकेशन जारी करते हुए कहा कि जितना ज्यादा हो सके डिजिटल पेमेंट और ऑनलाइन पेमेंट माध्यमों का इस्तेमाल करें।

आने वाला समय बैंकिंग के डिजिटलीकरण में काफी महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने को तैयार है। इसी कड़ी में अगला कदम है, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस)। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) सपोर्ट अगर सही तरीके से इस्तेमाल किया जाए, तो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में बैंकिंग उद्योग में क्रांति लाने की क्षमता है। यह ग्राहक सेवा, व्यक्तिगत सहायता, व्यक्तिगत अनुस्मारक और 24X7 वित्तीय नियोजन उपलब्ध करवाते हुए अपनी सुरक्षा क्षमताओं में सुधार करेगा। इससे न केवल ग्राहक अनुभव में सुधार होगा बल्कि उपभोक्ताओं के साथ दीर्घकालिक, सार्थक जुड़ाव भी सुनिश्चित होगा। एक उदाहरण ऑनलाइन बैंकिंग के भीतर आभासी सहायकों का उपयोग है जो लेनदेन को गति देने और सरल बनाने के लिए है। उदाहरण के लिए, ग्राहक बैंक ऑफ इंडिया के मोबाइल बैंकिंग ऐप में वर्चुअल बैंकिंग सहायक ‘बीओआई सेवा’ के माध्यम से खाते की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इस तरह से यह गूगल, सिरी या एलेक्सा से बात करने जैसा ही है। इससे आप खाते की शेष राशि को पुनः जांच सकते हैं, पिछले लेन-देन का पता लगा सकते हैं,

आप अपने साप्ताहिक और मासिक खर्च का अवलोकन कर सकते हैं, आवर्ती खर्चों पर नज़र रख सकते हैं और किसी भी अनियमितता के बारे में आपको सूचना मिल सकती है। ग्राहक को केवल एक निर्देश जारी करने या एक प्रश्न पूछने की आवश्यकता है, जैसे “क्या मैंने अपने क्रेडिट कार्ड बिल का भुगतान किया है?” या फिर मेरे “जमा खाते में कितनी धनराशि शेष है।”

बैंकिंग क्षेत्र में शामिल जमीनी डिजिटलीकरण पहले से ही पर्याप्त और भरपूर है। हमने पिछले कुछ वर्षों में कई सुधार देखे हैं। अब हम अपने दिन-प्रतिदिन के लेन-देन से जुड़ी सहजता से इनकार नहीं कर सकते। उम्मीद है कि इस मोर्चे पर हमें और भी बहुत कुछ देखने को मिलेगा। हर रोज विभिन्न नई अवधारणाओं को क्रियान्वित किया जा रहा है और इसके लिए इस वर्ष की शुरुआत में महत्वपूर्ण स्टार्टअप्स को वित्त पोषित किया गया है। डिजिटलीकरण ने निस्संदेह बैंकिंग क्षेत्र को सावधानीपूर्वक लाभ और ध्यान देने के लिए प्रेरित किया है। डिजिटल बैंकिंग में साइबर सुरक्षा बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। एक ओर जहां नकदी का उपयोग घटने से छीना-छपटी की घटनाएँ कम हुई हैं वहीं डिजिटल धोखाधड़ी के मामले बढ़े हैं। साइबर सुरक्षा की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी स्वयं उपभोक्ता हैं जिन्हें साइबर अपराधों के बारे में निरंतर जागरूक किया जाना चाहिए। अपने स्तर पर वित्तीय संस्थान साइबर सुरक्षा के महती उपाय करने में अग्रणी हैं और ‘आरबीआई कहता है’ जैसी मुहिम के माध्यम से आमजन को भी निरंतर धोखाधड़ियों के बारे में जागरूक और सतर्क किया जा रहा है।

संक्षेप में कहें तो सबसे अच्छी बात यह है कि बढ़ा हुआ समग्र अनुभव बैंकिंग क्षेत्र और लोगों द्वारा समान रूप से दो-तरफा सड़क है। बैंकिंग क्षेत्र में इसे बड़ा बनाने के लिए कई अन्य प्रौद्योगिकियां तैयार हैं, और डिजिटल क्रांति उन्हें गति देने को तत्पर है। आज तकनीकी दुनिया में हर जगह सर्वाधिक जिन महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं का जिक्र होता, डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन उनमें से एक हो चली है। दुनिया भर के सरकारी तथा निजी संस्थान डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन की

प्रक्रिया को अपनाकर न सिर्फ बेहतर परिणाम प्राप्त कर रहे हैं बल्कि अपने खर्च भी घटा रहे हैं और कामकाज के ढाँचे को ज्यादा कार्यकुशल व सुसंगठित बना रहे हैं। तकनीकी कायाकल्प की यह प्रक्रिया एक समावेशी प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य तकनीकी नवोन्मेष के लाभों को हर संगठन तथा हर व्यक्ति तक पहुँचाना है। इस संदर्भ में निश्चित ही भारतीय भाषाओं की भूमिका न सिर्फ महत्वपूर्ण, बल्कि अनिवार्य हो जाती है। तकनीकी रूपांतरण की कोई भी प्रक्रिया तभी सार्थक तथा समावेशी हो सकती है जब वह भाषायी, सांस्कृतिक तथा व्यक्तिगत विविधताओं के साथ तालमेल बिठाए। भारतीय भाषाओं को साथ लिए बिना ‘डिजिटल रूपांतरण’ की प्रक्रिया अपने वास्तविक उद्देश्य को हासिल नहीं कर सकती और वह वास्तविक उद्देश्य है- निजी, कारोबारी तथा प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सरल, सुगम, सुसंगठित, तेज और कार्यकुशल बनाना। साथ ही साथ उत्पादकता, गुणवत्ता, लाभप्रदता और किरफायत को सुनिश्चित करते हुए डिजिटल-कार्य-संस्कृति को प्रोत्साहित करना। कुल मिलाकर भारत का आज का बैंकिंग स्वरूप बदलते परिवेश में नए कलेवर को अपना रहा है। ऐसे में आज जरूरत इस बात की है कि यह कलेवर भारतीय जनता के सामाजिक-आर्थिक विकास को और बेहतर बनाने में अपनी भूमिका निभाए जिससे देश के लोगों के जीवन में खुशियाँ और समृद्धि आ सके। बैंकिंग के डिजिटल रूपांतरण को जन-जन के लिए सुलभ बनाने में अहम भूमिका निभाने वाले बैंक कर्मियों के परिश्रम को एक शायर की निम्नलिखित दो पंक्तियाँ समर्पित हैं:

“यहाँ हजारों शायर ऐसे हैं जो तख्त बदलने निकले हैं
कुछ हमारे जैसे पागल हैं जो वक्त बदलने निकले हैं।”

मयंक शर्मा
रूड़की शाखा
देहरादून अंचल



The New JAM-UPI-ULI Trinity Revolutionizing India's Digital Public Infrastructure

The RBI governor Shri. Shaktikanta Das in his speech at the Global Conference on Digital Public Infrastructure and Emerging Technologies event in Bengaluru has defined the New Trinity of JAM – UPI – ULI as a revolutionary step forward in India's Digital Infrastructure journey. With the way JAM trinity revolutionised the digital financial inclusion and DBT system along with UPI (Unified payments Interface) which transformed the payment ecosystem, with the expectation of ULI (Unified Lending Interface) transforming the lending interface, the New Trinity of JAM–UPI–ULI is envisaged to play an important part in RBI's strategy to create digital public infrastructure in the country.

JAM (Jandhan, Aadhaar and Mobile): The trinity of Jandhan accounts, Aadhaar, Mobile phones popularly known as JAM trinity, has provided the base for Digital Public Infrastructure (DPI) which is being leveraged for multiple Value Added Services. This DPI strategy is critically crafted focussing on three critical dimensions – digital identity, bank accounts and processing infrastructure through JAM trinity.

JANDHAN popularly known as Pradhan Mantri Jan Dhan Yojana (PMJDY) is a National Mission on Financial Inclusion encompassing an integrated approach to bring about comprehensive financial inclusion of all the households in the country. The plan envisages universal access to banking facilities with at least one Basic Savings Bank Account (BSBA) for every household, financial literacy, access to credit, insurance and pension facility. The plan also envisages channelling all Government benefits (from Centre / State / Local Body) to the beneficiaries' accounts and pushing the Direct

Benefits Transfer (DBT). PMJDY completed 10 years on August 28, 2024 which has been paramount in boosting financial inclusion and giving dignity to Crores of people especially women, youth and the marginalised communities. As per the progress report of the PMJDY, over the last decade 53.27 Crore BSBD accounts are opened with 29.64 Crore women beneficiaries and with a balance of Rs.2.28 lac Crore in beneficiaries' accounts.

AADHAAR a 12 digit unique Identification Number issued to Indian residents by the Unique Identification Authority of India (UIDAI) serves as a single and portable proof of biometric based digital identity. As per the UIDAI dashboard over 1.4 billion Aadhaar numbers have been generated for the Indian residents which is near universal for Indian population.

MOBILE PHONE once considered as a prized possession became a necessity now. The widespread adoption of mobile phones in India, enabled access to digital services. The mobile users in India have increased tremendously during the last decade. The immense benefit offered by the mobile has triggered this revolution. With a mobile phone in hand, one can be available round the clock, and can get up-to-date information on



anything at any time. The availability of internet on mobile phones has increased its utility tremendously. The availability of various banking facilities through mobile apps made the mobile a neo bank. As per the data published by TRAI mobile internet users in India are 898.92 million in June;2024 with overall tele density of 85.95% and rural tele density of 59.65%.

UPI (Unified Payments Interface): The Unified Payments Interface (UPI) is a revolutionary, user-friendly, real time payment solution that facilitates inter-bank transactions, and enables greater digital payments adoption in the country. Developed and launched by the National Payments Corporation of India in 2016, UPI is now one of the most preferred payment solutions in India, with billions of transactions every month. UPI's core function is to support easy and secured money transfers between bank accounts. It does this by adding multiple bank accounts into a single mobile application, allowing for seamless fund transfers and merchant payments. It also enables 'peer to peer' and 'peer to merchant' collection requests, which can be scheduled and paid as requested. Payments can be made using a UPI ID, UPI Number, Account number, and an Indian Financial System Code (IFSC). Payment security is as per applicable RBI guidelines using a 1-click 2-factor authentication where the second factor of authentication is the UPI PIN. Digital transactions through UPI recorded phenomenal growth during the pandemic year 2020-21. While initial participants on the UPI were banks, non-bank third party app providers and use of QR codes made the UPI more popular. UPI emerged as a robust, cost effective and portable retail payment system. As per the latest data of NPCI as of July 2024 NPCI has 605 (72 Payment Service Providers & 533 issuers) live members. Over 14.4 bn transactions by volume and 20.64 lakh crores by value took place in July 2024. As per RBI's DPI (Digital Payments Index) data, digital payments across the country registered a 12.6 % YOY rise as on March; 2024 with DPI index standing at 445.5 which is attributed to significant growth in

payment performance and infrastructure.

ULI (Unified Lending Interface): ULI is a digital platform introduced by the Reserve Bank of India (RBI) designed to streamline and expedite the lending process by integrating various financial and non-financial data sources into a unified system enabling frictionless credit. For digital credit delivery, the data required for credit appraisal are available with different entities like Central and State governments, account aggregators, banks, credit information companies and digital identity authorities. As these data sets are in separate systems, it creates hindrance in frictionless and timely delivery of rule-based lending. To address these concerns RBI had launched the pilot project in

2023 for setting up of a public technology platform for frictionless credit which is now branded as the ULI. Based on the experience of the pilot project a nationwide launch of ULI by RBI is expected in due course. ULI platform facilitates the seamless flow of a customer's digitised financial and non- financial data from multiple data service providers to lenders, making credit underwriting seamless and customer journeys frictionless. This platform facilitates seamless and consent based flow of digital information including even land records of various states, from multiple data service providers to lenders. This cuts down time taken for credit appraisal, especially for smaller and rural borrowers. The ULI architecture has common and standardised APIs (Application Programming Interfaces), designed for a 'plug and play' approach to ensure digital access to information from diverse sources. This reduces the complexity of multiple technical integrations. It enables borrowers to get the benefit of seamless delivery of credit, quicker turnaround time without requiring extensive documentation. In sum, by digitising access to customer's financial and non-financial data that otherwise resided in disparate silos, ULI is expected to cater to large unmet demand for credit across various sectors, more particularly for agriculture and MSME borrowers. With the banks' thrust on

shift towards digital loans ULI will be a big step forward in banks' digital loans journey.

In conclusion, the JAM-UPI-ULI trinity is a ground breaking initiative that would revolutionise India's digital public infrastructure landscape. By integrating financial inclusion, digital payments, and credit access, this trinity has created a robust framework for economic growth and development. The seamless convergence of Jan Dhan, Aadhar, and Mobile, coupled with the power of Unified Payments Interface and Unified Lending Interface, would enable a paradigm shift in the way financial services are delivered and accessed. As India continues to march towards a digital economy, the JAM-UPI-ULI trinity will play a pivotal role in expanding financial inclusion and literacy, promoting digital payments and reducing cash dependency and democratizing credit access and empowering small borrowers. In essence, the JAM-UPI-ULI trinity has set the stage for a more inclusive, efficient, and sustainable financial ecosystem, poised to propel India towards a brighter economic future.

Bibliography:

Inaugural address by RBI governor Shri Saktikant Das at the RBI@90 Global Conference on "Digital Public Infrastructure and Emerging Technologies" on 26th August, 2024 in Bengaluru.

<https://pmjdy.gov.in/>

<https://www.trai.gov.in/release-publication/reports/telecom-subscriptions-reports>

<https://www.npci.org.in/what-we-do/upi/product-statistics>

RBI – Digital Payments Index for March 2024

Vanumu Nagendra Prasad

Chief Manager Vigilance
Department
Thiruvananthapuram Zone



युद्ध

मैं महादेव का वह त्रिनेत्र, छिपा प्रलय का जिसमें भेद,
मैं विषधर की हुँकार भी हूँ, ज्वालमुखी भूचाल भी हूँ,
तूफानों का प्रचंड वेग मैं, दावानल की अग्निरेख मैं,
आसमान का धूमकेतु मैं, राशिफल में राहुकेतु मैं,
मैं समुद्र का भीषण ज्वार, महा समुद्र की विप्लव धार,
धरती को कर सकता बंजर, विश्वासघात का खूनी खंजर,
तमस अँधेरा घोर अमावस, काली रातों का काला भय,
कब्रगाह की चीखे भी हूँ, स्वर गाता मातम की लह,
मैं भैरव का रण तांडव, मैं जलजला हूँ क्रयामत का, काल
का अंतिम रूप मैं, दुश्मन हूँ खुशियों की चाहत का ,
मैं रवि रश्मि की घोर तपन हूँ, मानव शरीर पर ढका कफ़न हूँ,
मैं अंतिम सच हूँ इस जग का, घने विपिन में कंटक मग सा,
हो जाओ अब तुम सावधान, वरना अब अपनी मृत्यु जान,
खत्म करो अब अपना अहं, अन्याय मिटे, हो आतंक दफ़न,
युद्धविहीन धरा का धरो संकल्प, मानवता की गहो शरण।

मनीष पाठक
लखनऊ अंचल



उच्च तकनीक कृषि-अवसर एवं चुनौतियाँ

उच्च तकनीक कृषि को परिशुद्ध कृषि अथवा स्मार्ट फ़ार्मिंग भी कहा जाता है। इसमें आधुनिक तकनीकों का उपयोग करके खेती के तौर-तरीकों को उन्नत बनाकर दक्षता और उत्पादकता बढ़ाने पर फोकस किया जाता है। कृषि की इस पद्धति में उन्नत उपकरणों का उपयोग करके कृषि के प्रक्रियाओं को सटीकता से पूरा किया जाता है। उदाहरण के लिए मिट्टी की अवस्था का जायजा लेने, फसलों में बीमारियों या कीटों के प्रभाव की वास्तविक समय निगरानी करने के लिए ड्रोन एवं सेटेलाइटों का उपयोग किया जाता है, सेंसरो के द्वारा मिट्टी की नमी, पोषक तत्वों की कमी का पता लगाकर सिंचाई एवं उर्वरकों का उचित उपयोग किया जाता है। रोपाई, निराई, कटाई करने के लिए रोबोटिक्स और ऑटोमेशन का उपयोग किया जाता है जिससे श्रम की लागत कम होती है और दक्षता बढ़ती है। जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि को हो रहे नुकसान को कम करने के लिए एआई का उपयोग डेटा के विश्लेषण के लिए किया जाता है ताकि बदलते मौसम के अनुसार फसलों का क्रम निर्धारित या परिवर्तित किया जा सके। जेनेटिक इंजीनियरिंग से फसलों की किस्मों में सुधार किया जाता है। वर्टिकल फ़ार्मिंग या हाइड्रोपोनिक्स पद्धतियों में नियंत्रित इंडोर वातावरण तैयार करके न्यूनतम संसाधनों में कृषि की जाती है।

मानव सभ्यता के इतिहास में आदिकाल से ही कृषि प्राथमिक व्यवसाय रहा है। कृषि के क्षेत्र में नवाचार से बैंकिंग के लिए भी नई संभावनाओं और अवसरों का निर्माण होता है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में जहां अधिकतर आबादी की आजीविका कृषि पर निर्भर है वहाँ बैंकिंग का कृषि से रिश्ता और अधिक गहरा हो जाता है। आइए उच्च तकनीकी कृषि में बैंकिंग के लिए अवसर और चुनौतियों के बारे में विस्तार से चर्चा करते हैं:

बढ़ते ऋण के अवसर: उच्च तकनीक वाली कृषि, उच्च पैदावार और अपनी क्षमता के साथ, अधिक वित्तपोषण अवसरों को आकर्षित करती है। बैंक अपनी उच्च लाभप्रदता और कम जोखिम के कारण उन्नत तकनीकों का उपयोग करके खेतों को वित्तपोषित करने के अधिक इच्छुक रहती हैं।

उच्च पूंजी निवेश: उच्च तकनीक वाली कृषि के लिए अक्सर प्रौद्योगिकी और बुनियादी ढांचे में अधिक पर्याप्त प्रारंभिक निवेश की आवश्यकता होती है। इससे बड़े ऋण मिल सकते हैं और निवेश पर अधिक रिटर्न भी मिल सकता है।

जोखिम न्यूनीकरण: ए.आई. और डेटा एनालिटिक्स जैसी उन्नत प्रौद्योगिकियां खेती से जुड़े जोखिमों को कम कर सकती हैं। इससे बैंकों के लिए उच्च तकनीक वाले कृषि उद्यमों को ऋण देना कम जोखिम भरा हो जाता है।

संपार्श्विक मूल्यांकन: उच्च तकनीक वाले उपकरण और आधारभूत संरचना बैंकों को सुरक्षा प्रदान करते हुए संपार्श्विक के रूप में काम कर सकते हैं। हालाँकि, ऐसी उन्नत प्रौद्योगिकियों के मूल्य का आकलन करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

विशिष्ट ऋण उत्पाद: बैंकों को उच्च तकनीक वाले कृषि व्यवसाय की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप विशेष ऋण उत्पाद विकसित करने की आवश्यकता हो सकती है।

उन्नत निगरानी और रिपोर्टिंग: प्रौद्योगिकी ऋणों का उपयोग और कृषि गतिविधियों की प्रगति की बेहतर निगरानी करने में सक्षम बनाती है। इससे बैंकों को निर्णय लेने और जोखिम मूल्यांकन में मदद मिलती है।

स्थिरता और पर्यावरण अनुपालन: उच्च तकनीक वाली कृषि द्वारा बैंकों को हरित वित्तपोषण विकल्पों के माध्यम से प्रोत्साहित किया जा सकता है।

प्रशिक्षण और विशेषज्ञता: बैंकों को ऋण आवेदनों का बेहतर आकलन करने और जोखिमों का प्रबंधन करने के लिए उच्च तकनीकी कृषि प्रथाओं और प्रौद्योगिकियों को समझने के लिए अपने कर्मचारियों को प्रशिक्षण देने में निवेश करने की आवश्यकता हो सकती है।

डेटा-संचालित निर्णय लेना: उच्च तकनीक वाली कृषि फसल की पैदावार, मिट्टी के स्वास्थ्य और मौसम के पैटर्न पर डेटा उत्पन्न करती है। बैंक इस डेटा का उपयोग ऋण अनुमोदन और जोखिम मूल्यांकन प्रक्रियाओं में सूचित निर्णय लेने के लिए कर सकते हैं।

वित्तीय उत्पादों में नवाचार: उच्च तकनीक कृषि की अनूठी मांगें वित्तीय उत्पादों में नवाचार को बढ़ावा देती हैं। बैंक कृषि चक्रों के अनुरूप लचीले पुनर्भुगतान कार्यक्रम की पेशकश कर सकते हैं या उच्च तकनीक वाले कृषि निवेशों के लिए नए वित्तीय उपकरण पेश कर सकते हैं।

सीमांत किसानों का समर्थन करना: छोटे पैमाने के किसानों के लिए उच्च तकनीक वाले कृषि समाधानों को सुलभ बनाने में बैंक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इसे सूक्ष्म-ऋण या सहयोगी मॉडल के माध्यम से हासिल किया जा सकता है, जिससे कृषि क्षेत्र में समावेशी विकास को बढ़ावा मिलेगा।

बीमा उत्पाद: उच्च तकनीक कृषि की पूर्वानुमानशीलता और दक्षता से अधिक सटीक बीमा उत्पादों का विकास हो सकता है। बैंक, बीमा कंपनियों के सहयोग से, उच्च तकनीक वाले खेतों के लिए अनुकूलित बीमा पैकेज की पेशकश कर सकते हैं।

टिकाऊ प्रथाओं को प्रोत्साहित करना: बैंक पर्यावरण के अनुकूल प्रौद्योगिकियों के लिए अनुकूल ऋण शर्तों की पेशकश करके टिकाऊ, उच्च तकनीक वाली कृषि प्रथाओं को अपनाने को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

साझेदारी का निर्माण: बैंक नवीनतम विकास से अवगत रहने और उच्च तकनीक कृषि के वित्तपोषण में तालमेल बनाने के लिए कृषि प्रौद्योगिकी कंपनियों, अनुसंधान संस्थानों और

सरकारी एजेंसियों के साथ साझेदारी बना सकते हैं।

वैश्विक व्यापार को सुगम बनाना: उच्च तकनीक वाली कृषि, कृषि निर्यात की गुणवत्ता और मात्रा को बढ़ावा दे सकती है। बैंक व्यापार वित्त उपकरणों और विदेशी मुद्रा लेनदेन के माध्यम से इस वैश्विक व्यापार को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

डिजिटल प्लेटफॉर्म और पहुंच में आसानी: ऋण आवेदन और संवितरण के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म का विकास तकनीक-प्रेमी किसानों के लिए विशेष रूप से फायदेमंद हो सकता है, जो प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करेगा और बैंकिंग सेवाओं को अधिक सुलभ बनाएगा।

जलवायु परिवर्तन के अनुसार ढालना: उच्च तकनीक वाली कृषि में अक्सर ऐसी प्रथाएँ और प्रौद्योगिकियाँ शामिल होती हैं जो जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीली होती हैं। बैंक इन पहलों की दीर्घकालिक व्यवहार्यता और खाद्य सुरक्षा में योगदान को पहचानकर उनका समर्थन कर सकते हैं।

संक्षेप में, बैंक वित्त में उच्च तकनीक कृषि की भूमिका बहुआयामी है, जिसमें आधुनिक कृषि की जरूरतों के लिए वित्तीय सेवाओं को अपनाना, टिकाऊ प्रथाओं को प्रोत्साहित करना और कृषि क्षेत्र में समग्र विकास और नवाचार का समर्थन करना शामिल है। बैंक कृषि में उन्नत तकनीक के लिए वित्तपोषण उपलब्ध करवाकर किसानों को सशक्त बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बैंकों द्वारा वित्तपोषण के माध्यम से सरकारें भी नवोन्मेषी पद्धतियों को समर्थन प्रदान करने में रुचि दिखाती हैं क्योंकि बैंक वित्तीय जोखिम के प्रबंधन करने में दक्ष होते हैं। इसलिए उन्नत तकनीक कृषि देश के विकास और बैंकों के कारोबार वृद्धि दोनों के लिए अच्छा अवसर है।

अजय अडसर

मुख्य प्रबंधक, सतर्कता विभाग
गोवा अंचल



गणेश - दि मैनेजमेंट गुरु



सभी विद्यार्थी प्रोफ़ेसर चौधरी की क्लास समाप्त होने की प्रतीक्षा कर रहे थे, क्योंकि उसके पश्चात उनके सबसे चहेते प्रोफ़ेसर दास की क्लास शुरू होने वाली थी। उनका सिखाने का अंदाज ही कुछ ऐसा था कि हर बार विद्यार्थियों को अध्ययन के साथ-साथ जीवन जीने का भी एक नया नजरिया प्राप्त होता था।

प्रोफ़ेसर दास के आते ही सभी विद्यार्थियों ने उनको अभिवादन किया, उन्होंने मुस्कुराकर उसे स्वीकार किया। आज कुछ नया सिखने को मिलेगा इस विचार से विद्यार्थियों में भी खुशी की लहर थी। प्रोफ़ेसर दास ने प्रोजेक्टर चालू किया और स्क्रीन पर बुद्धि के देवता गणेश जी की छवि कुछ अलग रूप में दिखाई दी।

विद्यार्थियों के आश्चर्यजनक चेहरों को देखकर प्रोफ़ेसर दास मंदमंद मुस्कुराते हुए बोले, “आज हम एक चर्चा सत्र रखेंगे, जिसमें आप सभी लोग इस चित्र में छुपे मैनेजमेंट पाठ पर बातचीत करेंगे। इस चर्चा सत्र का नाम है-

“गणेश- दि मैनेजमेंट गुरु” तो बताइए, गणेश जी की यह छवि आपको कौन-कौनसे मैनेजमेंट पाठ सिखाती है?”

हमेशा की तरह सौरभ ने सबसे पहले हाथ उठाया और खड़े होकर बोला, “सर, सबसे पहला पाठ जो मैं सोच पा रहा हूँ, वो यह की, एडाप्ट टू चेंज, अर्थात, परिवर्तन के अनुकूल बने। बिज़नेस हो या ज़िंदगी, जो परिवर्तन को स्वीकार करके नयी सोच को आगे ले जाता है, वो ही सफल होता है। जिस तरह इस छवि में गणेशजी टेक्नोलॉजी का उपयोग करते हुए दिख रहे हैं, उसी तरह किसी भी संस्था को यशस्वी होने के लिए, समय अनुसार योग्य टेक्नोलॉजी और प्रगतिशील उपलब्धियों का उपयोग करना जरूरी है।”

“बहुत खूब प्रोफ़ेसर दास सौरभ की ओर देखकर बोले। तुरंत रीना ने हाथ उठाया और बोली, सर, इस चित्र में गणेश जी कानों में हैडफ़ोन लगाये और कुछ सुनते दिखाई दे रहे हैं, जो हमें यह पाठ सिखाता है कि, बी अ गुड लिसनर, अर्थात अच्छे श्रोता बनें। एक अच्छे मैनेजर की यह निशानी है कि

वे एक अच्छे श्रोता हों, जो अपने ग्राहक तथा कर्मचारी की कही-अनकही जरूरतें सुन पाएं और उसके अनुसार अपने निर्णय लें।”

महेश रीना की बात पर मोहर लगाते हुए बोला, “सर, इस छवि में, गणेश जी अपने पारंपरिक वाहन मूषक के साथ-साथ कंप्यूटर माउस का भी उपयोग करते दिखाई दे रहे हैं, जिससे व्यापार व्यवस्थापन का एक और पाठ प्रतीत होता है, जो है-“एफिशिएंट यूटिलाइजेशन ऑफ़ रिसोर्सस, अर्थात-संसाधनों का कुशल उपयोग करना।” इसमें यह सुनिश्चित किया जाएगा कि संगठन की उन्नति के लिए उपलब्ध संसाधनों का यथोचित उपयोग हो रहा है या नहीं।”

तभी, अपने दोस्त महेश की बात को आगे ले जाते हुए, अनुप बोला, “सर, इस छवि में मुझे ऐसा आभास हो रहा है कि गणेश जी, जो कि मैनेजमेंट का स्वरूप प्रतीत हो रहे हैं और उनके वाहन मूषक, जो कि कर्मचारी का स्वरूप प्रतीत हो रहे हैं, वे दोनों एक-दूसरे दुसरे की ओर कुछ आशंकित नज़र से देख रहे हैं। इससे मुझे प्रबंधन का एक रोचक पाठ स्मरण होता है कि **प्रतिस्पर्धात्मक कर्मचारी संगठन की संपत्ति होते हैं** और कर्मचारियों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा संगठन के उन्नति का कारण बन सकती है। गणेशजी द्वारा मूषक की जगह माउस का प्रयोग, निश्चित रूप से मूषक को अपनी क्षमता और योग्यता को दिखाने के लिए प्रेरित करेगा और वह अपने कार्य का उचित प्रदर्शन करेंगे जिससे मूषक, माउस और अंत में संगठन की ही उन्नति प्राप्त होगी।”

तत्पश्चात, ममता ने अपना हाथ उठाया और बोली, सर, इस चित्र में गणेशजी के सामने एक से अधिक माउस दिखाई दे रहे हैं जो यह प्रदर्शित करता है कि दूसरी ओर एक से अधिक कार्य/संगणक होंगे। गणेश जी एक साथ अनेक संगणकों का नियंत्रण कर रहे हैं, अर्थात व्यापार व्यवस्थापन में, व्यवस्थापक को एक साथ कई सारी चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा और अपने संगठन को आगे बढ़ाना होगा। इसके लिए व्यवस्थापक एवं कर्मचारियों को

मल्टीफंक्शनल और मल्टीटैलेंटेड होना अति आवश्यक है।”

ममता के बाद राकेश ने अपना विचार रखने के लिए हाथ उठाया और कहा, सर, इस चित्र को देखकर मैं यह सोच पा रहा हूँ कि, गणेश जी माउस और कंप्यूटर आदि सामग्री की मदद से कुछ डेटा एनालिसिस कर रहे हैं। जिससे हमें मैनेजमेंट का एक महत्वपूर्ण पाठ सीखने को मिलता है, जो है- **मार्केट रिसर्च एंड मार्केटिंग रिसर्च**, अर्थात बाजार अनुसंधान एवं विपणन अनुसंधान। किसी भी संगठन को अपने व्यापार को सफल बनाने के लिए, हर पायदान पर अपने ग्राहकों की जरूरतों को सर्वोच्च प्राथमिकता देना अनिवार्य है। इस हेतु उचित बाजार अनुसंधान एवं विपणन अनुसंधान अति आवश्यक है।

“वेल डन स्टूडेंट्स! बहुत बढ़िया!” प्रोफ़ेसर दास अपने विद्यार्थियों की ओर देखकर हर्ष और गर्व से भर उठे।

पिछले कुछ दिनों में उनके सिखाये हुए प्रबंधन पाठ (मैनेजमेंट लेसनस) उनके विद्यार्थियों ने न केवल समझा था बल्कि उन्होंने किसी भी स्वरूप में किसी भी परिस्थिति में उन पाठों का आकलन और उचित कार्यन्वयन करने की दृष्टि प्राप्त कर ली थी।

अंत में प्रोफ़ेसर दास ने अपनी ओजस्वी शैली में कहा, **मैनेजमेंट तथा व्यवस्थापन यह एक कला है, फिर चाहे वो बिज़नेस मैनेजमेंट हो, लाइफ मैनेजमेंट हो या फिर रिलेशनशिप मैनेजमेंट हो, उचित अभ्यास, योग्य समर्पण और निरंतर प्रयास से ही यह कला साध्य होती है।”**

श्रीमती पल्लवी कंदले

ऋण निगरानी विभाग,
अहमदाबाद अंचल



7 Steps to Achieve Mental Wellness Pause, Breathe, Focus, Walk, Read, Eat & Sleep Well

Complete Wellness is incomplete without achieving mental well-being. How much we exercise or take care of our physical health, if mental wellness is not in our HEALTH MENU, the whole efforts put by us get futile. Let's find some simple 7 steps to start our Mental Wellness Journey:

1. **Pause a bit:** When everything is moving at such a fast pace and we are bombarded continuously with so much of information, our mind often gets restless. Blame the advance technology or the fast internet but the truth is that every information which is available with a single click, makes us unavailable for the present moment. When FAST is the problem, the simple solution lies in getting SLOW DOWN. Taking a pause, amidst chaos proves to be like a full stop for the running line. So for every one hour or two, pause for a minute and become aware of the present moment.
2. **Deep breathing- a natural detox:** Taking few deep breaths after every 1-2 hour reset our mind and provide us with much needed oxygen. So when you pause, take few deep breaths and continue the task in hand.
3. **Do one thing at one time:** Multi-tasking is a very overrated and a much misused practice. We must accept that like every machine, our brain also needs the right control. Often, we get involved in many tasks and get hyperactive which may be at times a need of the hour but should be limited to once in a blue moon. It's proven that when we focus on a single thing, the results are better and fast. So next time, when you have numerous things to do, prioritize and keep on completing the single task at hand one by one. It will lead to increase in productivity and efficiency.
4. **Walk a Bit:** Since our jobs are sedentary,

walking a bit can go a long run. Even 100 steps after having a lunch make a huge difference in the long run. Instead of checking mobile phone, walk a little either indoor or outdoor. Walking helps in circulation of blood thereby good for our brain. If your knee health permits, opt stairs instead of escalator. If your seat permits, fetch water or a nearby file for yourself. You are the best person to decide how many steps you add in each day according to your work environment.

5. **Pick that Book again:** Like a healthy food keeps a body fit, a wise or spiritual book keeps the mind positive and clutter free. A good book is like a small candle in the dark tunnel, although it is very small but its impact is very significant. Some GOOD BOOKS that helped me in my journey are as below:
 - a. The Atomic Habits By James Clear
 - b. The Simplest Gift By Stefanos Xenakis
 - c. Don't Sweat the Small Things and it's all Small Stuff by Richard Carlson
 - d. Think Like a Monk: Train your Mind for Peace and Purpose Every Day by Jay Shetty
 - e. Good Vibes, Good Life: How Self-Love is the key to Unlocking Your Greatness by Vex King
 - f. The Power of your Subconscious Mind By Joseph Murphy

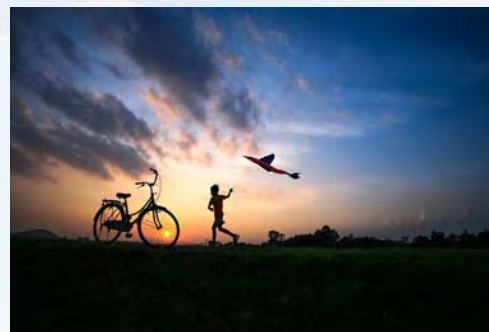


- g. Zen: The Art of Simple Living By Shunmyo Masuno
 - h. Ikigai: The Japanese Secret to a Long and Happy Life by Hector Garcia and Francesc Miralles
 - i. A Book of Simple Living By Ruskin Bond
 - j. My Journey - Transforming Dreams into Actions by A.P.J. Abdul Kalam
6. **A Good & Healthy Diet:** It sounds cliché but a diet rich in vital vitamins and minerals protect our brain's delicate but efficient mechanism of repair and revival. So, do not grab that shiny blue packet of biscuit or yellow namkeen, opt for some healthy stuff like below:
- a. Handful of Nuts or seeds (rich in Zinc, Magnesium and fibre)
 - b. Roasted Makhanas/Chana (rich in Potassium, Calcium and Iron)
 - c. Seasonal Fruits
 - d. Amla candy (Rich in Vitamin C & antioxidants)
 - e. Lemon Water, Sattu water, Buttermilk or any herbal tea (according to the weather conditions)
7. **A Good sound sleep:** Agree or disagree but these days, a sound 7-8 hours of sleep has become a luxury instead of a basic necessity. Immediate exposure to the blue light from mobile and laptops at night, makes one's mind active and hampers the production of natural sleep hormone MELATONIN. Solution is simple, keep the gadgets away at least 1 hour before sleep. If it's unavoidable due to some commitment, apply BLUE LIGHT FILTER on mobiles and Laptops to minimize the sleep damage. And on weekends, spare OTT stuff for daytime not for the precious night. No medicine or therapy can match the effect of a GOOD 7-8 HOUR SOUND SLEEP.

Richa Dogra
Manager
FGMO-Chandigarh



मासूम बचपन



कहते हैं सभी चार पल की है जिंदगी
सबसे कीमती है बचपन का पल
न कोई फिक्र न ज़माने की बंदिशें
जुबां पे रहता है वो बीता हुआ कल।

ढेर सारे वक्त को मुट्ठी में करके बंद हम
चुन- चुन संजोते थे कोमल पते और परिंदों के पर
छोटी- छोटी चीजों से मिलती थी न जाने कितनी खुशी
कि भूल जाते थे कि जाना भी है वापस घर।

छूट पड़ते थे पकड़ने रंग बिरंगी तितलियां
कभी ताल में घुस कर पकड़ते थे मछलियां
रात के अंधेरो में पीछे चले हम जुगनुओं के
आंखों में तैरती रहती थी उनकी रोशनियां।

आह ! बचपन के बड़े सुहावन, लुभावन वो दिन
घड़ी दो घड़ी याद कर, सकून से भर जाता है मन
भाग - दौड़ भरा उबाऊ सा हो चला है अब जीवन
मन को अभी भी भाता है गुजरा हुआ मासूम बचपन।

शैलेंद्र कुमार दुबे
मुख्य खजांची
बैरकपुर शाखा, बारासात अंचल



Save Water Save Planet



Water is one of the most basic natural resource for life's survival. Water is the pinnacle of life. It is an extraordinary element that holds life on this planet. Without water, we can't survive, and neither can the plants and animals around us. It may seem plentiful, but clean water is a precious and limited resource, and our future depends on how we treat it today.

In one of the study, on earth, saltwater makes up about 97 percent of the world's water, whereas fresh water is only 3% available of the total water resources. Surface water, subsurface river flow, groundwater, and frozen water are all-natural sources of freshwater.

India possesses only 4% of the world's water resources, covers around 2.45% of the world's surface area, and is a home to 18% of the world's total population. India has an average annual precipitation of 4,000 billion cubic meters (BCM), which is the country's primary source of freshwater. In our country, there are four significant surface water resources viz. Rivers, Lakes, Ponds, and Tanks.

Usage of Water

- Irrigation is by far the biggest consumer of India's water reserves, accounting for 78 percent of total water reserves, followed by the household sector (6%), and the industrial

sector (5%).

- In both urban and rural India, groundwater is a key supply of drinking water. Groundwater reserves provide 45 percent to irrigation and 80 percent to households.

Water Pollution and Scarcity

According to Sandra Postel "Water is the foundation of life. It is the one resource upon which all our ecosystems, human survival, and future economic growth depend. Yet we continue to overexploit, pollute, and waste it. Conservation is not merely an option but an imperative if we are to ensure a sustainable future for ourselves and future generations."

- India's surface water resources are polluted to the tune of around 70%.
- Wastewater from various sources, intensive agriculture, industrial output, infrastructural development, and untreated urban runoff are the major cause of water contamination. 2.9 billion gallons of untreated wastewater from industrial and domestic sources are discharged into the rivers every day.
- According to the World Health Organisation (WHO), water is responsible for half of India's sickness.
- Overharvesting of groundwater resources is causing a water crisis in villages. Whereas,

groundwater supplies over 80% of the country's drinking water.

The causes of Water Stress in India?

- As the population grows households and agriculture both require a lot of water.
- India's large agricultural sector consumes the majority of the country's water, leaving less for industry and homes.
- Due to rapid urbanization, the high water demand of India's densely populated cities is putting a strain on groundwater and surface water resources.
- Sky touching high rising towers require continuous flow of water.
- Drastic reduction of plants & trees and climate change have a huge impact on water resources as well as monsoonal rainfall.
- Rising temperatures, will boost evaporation and precipitation, while rainfall will vary more dramatically across the country.
- Droughts and floods became more common in different geographical places at different periods, and mountainous areas can expect major variations in snowfall and snowmelt.
- As the world's population grows, many of the world's major aquifers are becoming exhausted, owing to direct human consumption as well as groundwater irrigation for agriculture.
- Today the water below the ground is running out rapidly. While constructing roads, use of concrete, tiles and tar has increased, and when it rains, the rainwater cannot go inside the ground. Hence the groundwater cannot be recharged.

Despite advancements in the availability and quality of drinking water systems in India the country's high population has put a strain on projected water resources. The total water demand in India is projected to increase by 22% and 32 % in 2025 and 2050 respectively. Hence there is a strong possibility of severe scarcity of water in the near future.

The time is already ticking very rapidly. 63 % of India's population is fighting the water shortage problem every day. To save life on the earth, it is

everyone's responsibility to preserve water, in whatever available means.

Next to air, water is the most important element for the preservation of life. Water is a finite commodity which, if not managed properly, life will be at stake in the near future. Water conservation can go a long way to help alleviate these impending situations.

The government has also initiated numerous measures to alleviate the stress of the water crises, with the implementation of, 'Jal Shakti Abhiyan,'

'Har khet ko pani' 'More Crop per Drop', 'Jal Kranti Abhiyan' National Water Mission, National Ganga Mission, Dam Improvement and Rehabilitation Programme, interlinking of rivers, Groundwater Management, Flood Control and Forecast, Biodiversity Conservation, Wetland Conservation, Green India Mission, Jal Jeevan Mission and more.

Water Conservation:

Water conservation can be defined as the practice of using water efficiently to reduce unnecessary water wastage. Peter Gleick says, "We need to recognize the value of water, not just as a commodity to be bought and sold, but as a vital resource that is integral to every aspect of our lives – from agriculture to energy production, to the functioning of ecosystems that sustain the planet. Water conservation is about more than reducing use – it's about ensuring that future generations have access to the life-giving benefits of clean, fresh water." According to Wendell Berry "To cherish what remains of the Earth and to foster its renewal is our only legitimate hope of survival. Water, as the essential lifeblood of our planet, demands that we become its stewards. Conservation is not simply a gesture toward sustainability but a sacred responsibility to protect what sustains all life."

A wise person once said, "Water is the driving force of all nature, don't you think it becomes our duty to conserve as much water as possible for a better future?" Life without water is unimaginable, it is also one of the five basic elements of nature (earth, water, fire, air and space) which is essential for the survival of every living being.

“When the well’s dry, we know the worth of water.” – Benjamin Franklin

World Water Day

Since 1993, World Water Day has been held on the 22nd of March each year, to raise awareness and inspires action to tackle global water crisis.

World Water Day 2024 is focused on the theme, ‘Leveraging Water for Peace’.

Ways to conserve water:

There are numerous ways we can do little to conserve available fresh water for better future:

- Harvest Rain water.
- Take shorter showers under 5 minutes. You’ll save up to 1,000 gallons a month.
- Turn the water off while you shampoo and condition you hair. You can save more than 50 gallons a week.
- Install water-saving shower heads or flow restrictors.
- Turn off the water while brushing your teeth.
- Turn off the water while shaving.
- Serve only half a glass of water or serve in small glass of drinking water to guests, if required can be given more.
- Designate one glass for your drinking water each day. Use small plates for meals. This will cut down on the number of times you run your dishwasher.
- Check faucets and pipes for leaks at home as well as check outdoor faucets, pipes, and hoses for leaks and if so fix it.
- Rinse your vegetables in a bowl or sink full of clean water, instead of under a continuous running tap.
- Cook food in as little water as possible. This will also retain more of the nutrients.
- When washing dishes by hand, don't let the water run while rinsing. Fill one sink with wash water and the other with rinse water.
- Collect Air Conditioner outlet wastewater which can be used for plants or washing floors, vehicles etc.

- Don't run the hose while washing your car use bucket.
- Avoid washing your vehicle daily. It can be washed once or twice in a week only.
- Unclean water can be used for cleaning, watering plants, and washing cars.
- More plants die from over-watering than from under – watering. Be sure only to water plants when necessary.
- Water your lawn only when it needs.
- Plant more drought-resistant trees and plants
- Adjust sprinklers so that only your lawn is watered and not the house, sidewalk, or street.
- Collect the water you use for rinsing produce and reuse it to water houseplants.
- Check regularly your water meter and bill to track your water usage.
- When you clean you fish tank, use the water you’ve drained on your plants. The water is rich in nitrogen and phosphorus, providing free and effective fertilizer.
- Don’t use running water to thaw food. Defrost food in the refrigerator for water efficiency and food safety.
- When doing laundry, match the water level to the size of the load in washing machine.
- Make sure your swimming pools, fountains and ponds are equipped with recirculating pumps.
- Teach your children to turn the faucets off tightly after each use.
- Educate and cultivate water conservation habits among all family members.

Ban Ki-moon (Former UN Secretary-General):
"Water is life. Yet today, over a billion people do not have access to safe drinking water. This global water crisis is a major threat to global security and development. If we are to address these challenges, we must commit to water conservation, wise management, and equitable sharing of this precious resource."

Where & How much approximate water daily is wasted

Activity	Habit	Water Used	Remedy	Water used (as per remedy)	Water Saving
Washing Hands	Tap kept open for 1 minute per person per occasion	3 Lts.	Close the tap while applying soap	1 Lt	2 Lts (per hand wash)
Shaving	Tap kept open for 3 minutes	9 Lts	Use a Mug	1 Lt	8 Lts
Take a Bath	Shower kept open while applying soap	10 Lts	Close the shower while applying soap	4 Lts	6 Lts
Watering the Plants	Use a pipe for 5 minutes	25 Lts	Use a bucket/ mug	5 Lts	20 Lts
Cleaning the car	Use a pipe for 8 minutes	40 Lts	Use a bucket/ mug	10 Lts	30 Lts
Leaking of a tap	Whole day	80 Lts	Change the washer and fix the water leak	NIL	80 Lts

NOTE: Above table is illustrative only

“Don’t be the leak in our global flow”

“No Water No Life”

Ref: water-resources-in-india-geography

Rajkumar Pamnani
Information Security Cell
Head Office



विश्वास

विश्वास रूपी डोर को थाम, हर कदम मैं बढ़ाऊंगा,
कैसा भी हो रास्ता, मंजिल को मैं छु पाऊंगा,
लाख मुश्किलें आएँगी, चलता चला जाऊंगा,
परिश्रम और आत्मविश्वास से, जीवन को बदल पाऊंगा।

संघर्ष की तपति भट्टी से, किरदार मैं निखार पाऊंगा,
हिम्मत बांध कर बस, आगे बढ़ता जाऊंगा,
कदम बढ़ाकर मंजिल की, लंबाई को नाप पाऊंगा,
नहीं रुकूँगा ,नहीं थकूँगा, ऐसा मैं बन जाऊंगा।

खुद पर है विश्वास अगर, इस पल क्या, वक़्त ही बदल जाऊंगा,
घेरा भी हो हजारों मुश्किलों ने अगर, उनको भी पार कर जाऊंगा,
झोके में छिपा हूँ एक तूफान बनकर, वैसे ही जोश भर पाऊंगा,
बंजर माटी में पलकर, मृत्यु से जीवन खींच पाऊंगा।

ये धरती क्या एक दिन, आसमान को भी झुकाऊंगा,
हालात कब तक रोकेंगे मुझे, चलता चला जाऊंगा,
विश्वास को ऊँचा कर, हर कदम मैं बढ़ाऊंगा, चाहे कैसा
भी हो रास्ता, मंजिल को मैं पाऊंगा ।

संतोष कुमार

खुदरा व्यापार केंद्र
गया आंचलिक कार्यालय



“सिसकती रूह”

आज सुबह जब अखबार पढ़ा,
एक खबर पर ध्यान पड़ा,
खबर थी वह क्रूरता की, बर्बरता की,
समाज में काली विभीषिका की।

अखबार के कोने में एक चित्र था,
दृश्य उसका विचित्र था,
था अधजला, क्षत-विक्षत निर्वस्त्र शरीर ,
जिसे देख टूट जाए मानवता का धीर।

खबर थी यह एक महानगर की,
बयां हो रही थी कहानी स्त्रियों पे कहर की,
घटना थी यह मानवता के शर्मसार होने की,
इंसान की धिनौनी पशुता को धिक्कारने की।

खबर सुन, कुछ राजनीतिक शुभचिंतक आगे आए ,
इस निर्वस्त्र पीड़ा को भी धर्म का चोला पहनाए,
इसे किसी ने मजहबी रंग दे डाला,
तो किसी ने उस स्त्री को ही दोषी बना डाला।

पर वह शरीर अब मूक था,
घृणित वासना के मद में ऐसा सलूक था,
जो कभी स्त्री होने पर इतरायी थी,
अपने होने की यह व्यथा उसने पाई थी।

बहुत भयावह वह मंजर होगा,
जब जीते जी सीने में खंजर होगा,
जो जीवन था सबकी आंखों का तारा ,
अब बेजान अस्थि-पंजर था वो बेचारा।

बोली देह कि मर तो चुकी थी मैं उसी घड़ी,
जब उन दरिंदों के शिकंजे में थी पड़ी,
खुद को बचाने के लिए,
मैं उनसे अंत तक लड़ी।

देखो मैं सशक्त और शिक्षित नारी हूँ,
फिर भी हैवानियत से हारी हूँ,
अभी मैं तुम्हारे सामने पड़ी हूँ,
एक प्रश्न के रूप में खड़ी हूँ।

अभी तो मैं राख हूँ ,
पर इस चमन की तो साख हूँ,
मैं सब से इंसान मांगती हूँ,
इंसान में इंसानियत चाहती हूँ।

तुम मुझे बस एक खबर ना रहने देना,
उन जल्लादों को यूं ही मत बख्स देना,
वरना जब-जब पलटोगे तुम पन्ने अखबारों के,
पाओगे असंख्य चेहरे वहशी हत्यारों के।

तुम हर रोज खबर पढ़ोगे,
चित्र भी देखोगे और पन्ना पलट दोगे,
नहीं अगर जागे अभी, फिर तब जागेंगे,
जब अखबार वाले, किसी अपने की खबर छापेंगे।

श्री शिवम पांडे
वाराणसी अंचल



स्थापना दिवस / Foundation Day



स्थापना दिवस / Foundation Day



स्थापना दिवस / Foundation Day



स्थापना दिवस / Foundation Day



The Imperative of Climate Action at COP29



The 29th Conference of the Parties (COP29), set to take place from November 11 to 22, 2024, in Baku, Azerbaijan, comes at a pivotal time for global climate action. The first COP, held in Berlin in 1995, laid the foundation for international cooperation on climate change. Nearly three decades later, the world grapples with worsening climate crises, as evidenced by events like Himachal Pradesh experiencing a 97% rainfall deficiency in October 2024—the third-highest deficiency since records began in 1901. Such anomalies underscore the profound impact of climate change and the urgent need for action.

The State of Climate Finance

At the core of COP29 discussions will be the unresolved issue of climate finance. Over a decade ago, wealthy nations pledged \$100 billion annually to support developing countries' climate mitigation and adaptation efforts—a commitment that remains unmet. Critics, including prominent economist Nicholas Stern, have termed this pledge inadequate given the scale of the global crisis,

with annual requirements exceeding \$4.5 trillion by 2030 to align with net-zero goals (Stern, *The Economics of Climate Change*, 2006). A robust New Collective Quantified Goal is expected to be finalized at COP29, emphasizing the mobilization of private capital and structural reforms in the global financial system to bridge the gap.

Transitioning from Fossil Fuels

The 2023 COP28 in Dubai saw incremental progress on critical issues, including the commitment to phase out fossil fuels and limit global temperature rise to 1.5°C above pre-industrial levels. However, carbon dioxide levels are accumulating faster than ever, rising by over 10% in two decades (World Meteorological Organization Report, 2023). Azerbaijan, a fossil fuel-dependent nation, faces scrutiny as host, with critics urging it to prioritize global over national interests in facilitating this transition.

Health Impacts of Climate Change

A 2023 report by The Lancet Countdown revealed alarming health consequences of climate

change. Heat-related mortality among individuals over 65 has surged by 167% in the last three decades, highlighting the intersection of climate and public health (The Lancet Countdown on Health and Climate Change, 2023). These findings underline the urgency for comprehensive action at COP29.

India's Role in Climate Action

India, representing the Global South, continues to champion equitable climate solutions. Despite being the world's third-largest emitter, India boasts low per capita emissions and has already achieved its target of generating 43.6% of energy from non-fossil fuel sources, nine years ahead of schedule. India has also undertaken significant steps, including:

- 1. Renewable Energy Expansion:** Initiatives like PM-KUSUM and rooftop solar installations have catalyzed growth in solar energy, reducing reliance on fossil fuels.
- 2. Energy Efficiency:** Programmes targeting reduced energy consumption across industries complement the renewable energy push.
- 3. Afforestation and Biodiversity Conservation:** Large-scale afforestation efforts are critical for carbon sequestration and combating deforestation.
- 4. Sustainable Transportation:** The implementation of stringent Bureau of Indian Standards (BIS) norms and the phasing out of old diesel vehicles signify a commitment to reducing urban air pollution.

India's comprehensive approach has drawn praise, with Dr. R.K. Pachauri, former IPCC Chair, highlighting the nation's leadership in balancing development and sustainability (IPCC AR5, 2014).

Key Questions for COP29

COP29 must address fundamental questions:
Who bears the financial responsibility for climate action?

How can funding mechanisms ensure equitable access for developing nations?

Can nations reconcile geopolitical tensions to prioritize global climate objectives?

The summit presents an opportunity for meaningful progress on national climate action plans under the Paris Agreement. However, experts like Christiana Figueres, former UNFCCC Executive Secretary, warn that global action is lagging behind commitments (This Is the Way: A New Direction for Climate Action, 2021).

The Road Ahead

As the climate crisis deepens, the world can no longer afford incremental steps. COP29 must galvanize nations toward a unified strategy that prioritizes urgent emission reductions, equitable finance mechanisms, and sustainable development. Without decisive action, the 1.5°C target may soon become unattainable, with devastating consequences for humanity and the planet.

References

1. Stern, N. (2006). The Economics of Climate Change: The Stern Review.
2. World Meteorological Organization. (2023). State of the Global Climate Report.
3. The Lancet Countdown on Health and Climate Change. (2023). Ninth Report.
4. Figueres, C. (2021). This Is the Way: A New Direction for Climate Action.
5. Pachauri, R.K. (2014). IPCC Fifth Assessment Report.

Yash Pal Rahlan
Retd. Manager,
Bank of India



The Importance of Hindi and Local Languages in Indian Banking and Its Reach in Remote Areas

India is a country where banking services play a crucial role in economic development. However, to make these services effective, especially in a country where hundreds of languages are spoken, it becomes vital to communicate with people in the languages they understand best—primarily Hindi and local languages. These languages are the key to bridging the gap between the formal banking sector and the millions of people living in remote and rural areas.

Why Hindi and Local Languages Matter in Banking

India's banking system has evolved significantly over the years, but for a large section of the population, especially in rural and remote areas, the access to banking services remains a challenge. One of the primary barriers is language. In many villages, people are not comfortable with English, the dominant language of banking. They feel more confident and comfortable communicating in Hindi or their local language.

- 1. Understanding the Basics:** For many first-time banking users, complex financial terms can be overwhelming. If the bank's language is unfamiliar, it further discourages people from using banking services. By offering services in Hindi and local languages, banks make it easier for people to understand essential concepts like savings accounts, loans, insurance, and digital transactions.
- 2. Trust and Comfort:** Language plays a huge role in building trust. When people can interact with bank officials and understand documents in their native language, they feel more confident in using those services. This trust is crucial for encouraging savings and responsible borrowing habits among the rural population.

- 3. Promoting Financial Literacy:** Financial literacy campaigns conducted in Hindi and regional languages have a much higher success rate than those conducted in English. People are more likely to engage with the content and apply that knowledge in their lives when it's in a language they speak daily.

Reaching Remote Areas: The Role of Language

One of the biggest challenges in the Indian banking sector is reaching the most remote and rural parts of the country. Many of these areas have poor infrastructure, limited access to technology, and a lack of formal financial services. Here, the role of language becomes even more critical.

- 1. Banking Correspondents:** Banking correspondents, who are often locals, are employed to serve as a bridge between banks and rural customers. They communicate with people in their local language, explaining how to open accounts, use ATMs, or access government schemes. Their ability to speak the local dialect ensures that the message of financial inclusion reaches the most remote areas.
- 2. Multilingual Banking Technology:** With the rise of digital banking and mobile banking apps, it has become essential to offer these platforms in multiple languages. Many banks have introduced apps and mobile banking services that can be accessed in Hindi and various other regional languages. This enables people in rural areas to carry out transactions, check their balances, or apply for loans using a language they understand.
- 3. Government Initiatives:** The Indian government has also recognized the importance of local languages in promoting banking services.

Schemes like Pradhan Mantri Jan Dhan Yojana (PMJDY) aim to promote financial inclusion, and the messaging around these schemes is often delivered in Hindi and local languages to maximize reach. Localized communication is key to ensuring that the benefits of these schemes reach the intended population.

4. Rural Branches and ATMs: Banks operating in rural and remote areas are increasingly using signage and customer service in local languages. ATMs, too, are being adapted to offer options in Hindi and regional languages, making them more user-friendly for the local population.

Challenges and the Way Forward

While efforts to promote Hindi and local languages in banking have been successful to a degree, there are still challenges. One of the main hurdles is the availability of adequately trained staff who can communicate effectively in multiple languages. Additionally, translating complex financial terms from English to regional languages without losing their meaning can be difficult. However, continuous efforts from both government and private banks are helping overcome these challenges.

Conclusion

In a diverse country like India, language is a powerful tool that can either connect or divide. For the banking sector, using Hindi and local languages is not just about convenience; it's about ensuring financial inclusion for all. By reaching people in their native languages, banks can foster trust, promote financial literacy, and truly empower the rural population. With the right approach and resources, banking in India can become accessible to even the most remote corners of the country.

Lakshmi Paswan
Barasat Zone



संघर्ष

शाम ढले भारी मन से, जब मैं मकान पर जाता हूँ,
चाँद निकल आता है छत पर, मैं खुद में ढल जाता हूँ,
कमरे के सूनेपन से, टिक-टिक घड़ियाँ बतियाती हैं,
बिस्तर पर बैग फेंकते हुए अम्मा, याद तुम्हारी आती है,
एकाकीपन से उकताकर, शीशे में अक्स निहारा भी है..
इक संघर्ष हमारा भी है...

पार्टी क्लब की भीड़ में भी, खामोशी आवाज लगाती है,
हम भीड़ में जीते रहते हैं पर जिंदगी मरती जाती है,
फिल्टर वाले धुएं में हम दर्द उड़ाया करते हैं,
गला रुंध भी जाता है तो ठंडी सांसे भरते हैं..
दस बाई दस की दीवारों पर दस-दस मुक्का मारा भी है..
इक संघर्ष हमारा भी है....

सोलह सौ सत्तानवे नम्बर मोबाइल में सेव भी हैं,
फेसबुक इंस्टा ट्विटर पर करते सब हमको वेव भी हैं,
लेकिन उघड़ कर रख दें दिल, है ऐसा कोई यार नहीं,
भीतर बैठा लेखक भी, साथ आने को तैयार नहीं, खुद
को समझाया भी है, खुद को दुत्कारा भी है..
इक संघर्ष हमारा भी है....

मुझको याद है अम्मा, उस दिन कितनी खुश थी तुम,
लल्ला की नौकरी लगी है, सुनकर चहक उठी थी तुम,
आठ बसंत बीत गए तब से, पर जीवन ये पतझड़ है,
चार माह ना संग रह सका, सब हड़बड़ की गड़बड़ है,
रात में सोते से उठकर अम्मा, तेरा नाम पुकारा भी है..
इक संघर्ष हमारा भी है...

सौरभ मणि त्रिपाठी
जौनपुर शाखा,
वाराणसी अंचल



आस्ति गुणवत्ता के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई)

भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में गैर-निष्पादित आस्तियां अर्थात् एनपीए एक गंभीर चुनौती बनी हुई है। एनपीए की समस्या बैंक की वित्तीय स्थिरता गंभीर रूप से प्रभावित करती है, जिससे न केवल बैंक की लाभप्रदता घटती है,

बल्कि सामरिक परिचालनों पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। एनपीए की वसूली के लिए अनेक परंपरागत उपाय किए जाते हैं, लेकिन इनमें समय और संसाधनों की अधिक खपत होने के कारण ये उपाय और अधिक नुकसानदायक साबित होते हैं। इस संदर्भ में, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) एक प्रभावी उपकरण के रूप में उभर कर आया है, जो एनपीए वसूली की प्रक्रिया को अधिक कुशल, तेज और प्रभावी बना सकता है। अभी तक भारत सरकार तथा आर बी आई ने समय-समय पर बैंकों की आस्ति गुणवत्ता को बेहतर बनाए रखने के लिए अनेकों उपाय किए हैं जैसे कि -

आस्ति गुणवत्ता समीक्षा: 2015 में शुरू की गई इस पहल में दबावग्रस्त आस्तियों की सटीक पहचान करने और एनपीए की पहचान को पारदर्शी ढंग से सुनिश्चित करने के लिए बैंकों की बहियों/विवरणियों की व्यापक जांच शामिल की गई।

त्वरित सुधारात्मक कार्रवाई (पीसीए) ढांचा: 2017 में संशोधित, पीसीए ढांचा बैंकों के वित्तीय स्वास्थ्य की निगरानी करता है और पूंजी पर्याप्तता, आस्ति गुणवत्ता और लाभप्रदता जैसे क्षेत्रों में विशिष्ट सीमा से नीचे आने वाले वित्तीय संस्थानों के लिए सुधारात्मक कार्रवाई सुनिश्चित करने हेतु प्रतिबंध लगाता है।

दिवाला और दिवालियापन संहिता (आईबीसी), 2016: आईबीसी तनावग्रस्त आस्तियों के लिए एक सुव्यवस्थित, समयबद्ध समाधान प्रक्रिया प्रदान करता है। यह अधिक कुशल दिवाला प्रक्रिया के माध्यम से वसूली

दर और उधारकर्ताओं से सौदेबाजी की शक्ति को बढ़ाने में मदद करता है।

ऋण समाधान योजनाएँ: विभिन्न योजनाएँ शुरू की गई हैं, जिनमें ऋण पुनर्संरचना के लिए कॉर्पोरेट ऋण पुनर्संरचना (सीडीआर), ऋण-से-इक्विटी रूपांतरण की अनुमति देने वाली रणनीतिक ऋण पुनर्संरचना (एसडीआर), और तनावग्रस्त आस्तियों की सतत संरचना के लिए योजना (एस4ए) शामिल हैं। बड़े ऋणों को स्थिर और गैर-स्थिर के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

बैंड बैंक (एनएआरसीएल) का गठन: बैंकों से बड़े एनपीए लेने, इन आस्तियों का प्रबंधन करने और उनकी वसूली या बिक्री की दिशा में काम करने के लिए नेशनल एसेट रिकंस्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड (एनएआरसीएल) की स्थापना की गई है।

पर्यवेक्षण को मजबूत करना: एनपीए मानदंडों के अनुपालन और बेहतर जोखिम प्रबंधन को सुनिश्चित करने के लिए नियमित ऑडिट और निरीक्षण के माध्यम से बैंकों की निगरानी और पर्यवेक्षण में वृद्धि की गई है।

क्रेडिट सूचना अवसंरचना: क्रेडिट मूल्यांकन प्रक्रियाओं को बढ़ाने के लिए क्रेडिट सूचना कंपनियों (सीआईसी) के माध्यम से बैंकों के बीच उधारकर्ता क्रेडिट इतिहास की बेहतर साझेदारी सुनिश्चित की जा रही है।

तकनीकी एकीकरण: बेहतर निगरानी और संभावित चूक का शीघ्र पता लगाने के लिए डेटा एनालिटिक्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का उपयोग, साथ ही पूर्व-कालिक उपायों के लिए प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली विकसित करना।

संकटग्रस्त आस्तियों को पुनर्जीवित करने के लिए रूपरेखा: इसमें बैंकों को उच्च मूल्य वाले उधारकर्ताओं के एक्सपोजर की निगरानी में मदद करने के लिए क्रेडिट डेटा

एकत्र करने, संग्रहीत करने और प्रसारित करने के लिए बड़े क्रेडिट पर सूचना के केंद्रीय भंडार (सीआरआईएलसी) जैसे उपाय शामिल हैं।

तनावग्रस्त आस्तियों का समाधान - संशोधित ढांचा (फरवरी 2018): इस ढांचे के माध्यम से पिछली योजनाओं में परिवर्तन किया गया है और तनावग्रस्त आस्तियों के समाधान के लिए ठोस समयसीमा की पेशकश की गई है। यह बैंकों में तनाव की पहचान करने और एक निर्दिष्ट अवधि के भीतर समाधान योजना लागू करने की व्यवस्था उपलब्ध करवाता है।

पर्यवेक्षी समीक्षा और मूल्यांकन प्रक्रिया (एसआरईपी): यह बेसल III ढांचे का हिस्सा है, एसआरईपी में उभरते जोखिमों को सक्रिय रूप से संबोधित करने के लिए जोखिम प्रबंधन, शासन और पूंजी पर्याप्तता पर ध्यान देने के साथ-साथ बैंकों के परिचालन प्रदर्शन की निरंतर निगरानी शामिल है।

इरादतन चूककर्ताओं संबंधी मानदंड: इरादतन चूककर्ताओं की पहचान करने और उनके खिलाफ कार्रवाई करने के लिए मजबूत मानदंड तैयार किए गए हैं। जिसमें उन्हें भविष्य में बैंकिंग वित्त तक पहुंचने से रोकना और बकाया वसूलने के लिए कानूनी कार्रवाई किया जाना शामिल है।

बड़े एक्सपोज़र फ्रेमवर्क का कार्यान्वयन: यह फ्रेमवर्क उस एक्सपोज़र को सीमित करता है जो एक बैंक किसी एकल उधारकर्ता या जुड़े उधारकर्ताओं के समूह के लिए कर सकता है। इससे एकाग्रता जोखिम और बड़े एनपीए की संभावना कम हो जाती है।

बैंकों में प्रशासन को मजबूत बनाना: बैंकों के भीतर शासन तंत्र में सुधार के लिए दिशानिर्देशों को तैयार करना। इसमें बेहतर निगरानी सुनिश्चित करने के लिए बोर्ड संरचना, ऑडिट समिति के कार्य और जोखिम प्रबंधन प्रथाएं शामिल हैं।

आधार दर का परिचय: यह सुनिश्चित किया गया है कि बैंक कम नीतिगत दरों का लाभ उधारकर्ताओं को दें।

इससे ऋण को अधिक किफायती बनाने में मदद मिलती है और चूक की संभावना कम हो जाती है।

लक्षित दीर्घकालिक रेपो परिचालन (टीएलटीआरओ): बैंकिंग प्रणाली में तरलता लाने के उद्देश्य से, ये परिचालन सुनिश्चित करते हैं कि बैंकों के पास तनावग्रस्त क्षेत्रों और उधारकर्ताओं को वित्तपोषित करने के लिए पर्याप्त धन है।

विशेष उल्लेख खाते (एसएमए): प्रारंभिक तनाव के लक्षण दिखाने वाले खातों की पहचान करने के लिए यह वर्गीकरण किया गया है, शीघ्र हस्तक्षेप की सुविधा के लिए अतिदेय भुगतान की अवधि के आधार पर एसएमए-0, एसएमए-1 और एसएमए-2 में वर्गीकृत किया गया है।

इन सभी उपायों से भारतीय बैंक एनपीए को काफी हद तक नियंत्रित कर पाये हैं किन्तु बदलते समय में उच्च तकनीक का उपयोग करते हुये हम एनपीए वसूली में एआई के प्रभावी उपयोग की आवश्यकता पर चर्चा करेंगे।

1. एनपीए की पहचान और वर्गीकरण में एआई का उपयोग

एआई का सबसे महत्वपूर्ण उपयोग एनपीए की समय रहते पहचान और वर्गीकरण में किया जा सकता है। पारंपरिक दृष्टिकोण में, बैंकों को एनपीए की पहचान में देरी हो सकती है, जिससे नुकसान और भी बढ़ जाता है। एआई एल्गोरिदम बैंक के डेटाबेस का विश्लेषण कर सकते हैं और शुरुआती संकेतों को पहचान सकते हैं, जैसे कि ऋण चुकौती में देरी, ग्राहक की वित्तीय स्थिति में गिरावट, कारोबार के क्षेत्र विशेष में भावी संकट की भविष्यवाणी और अन्य जोखिम कारक जो की आगे चल कर एनपीए बढ़ने के मूल कारण बन सकते हैं। इन संकेतों का विश्लेषण कर, एआई बैंक को समय रहते चेतावनी देता है, जिससे बैंक उचित कदम उठा सकते हैं। एआई मॉडल्स संभावित एनपीए की पहचान करके उन्हें समय रहते नियंत्रित करने में मदद कर सकते हैं, जिससे बैंक को बड़े नुकसान से बचाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी ग्राहक की वित्तीय स्थिति अचानक बिगड़ जाती है,

तो एआई एल्गोरिदम इसे उसके डिजिटल भुगतान डाटा या अन्य उपकरणों के माध्यम से पहचान सकते हैं और बैंक को सचेत कर सकते हैं ताकि बैंक उचित निवारक उपाय कर सके।

2. ग्राहक व्यवहार विश्लेषण और ऋण पुनर्संरचना

एआई का उपयोग ग्राहक व्यवहार के विश्लेषण में भी किया जा सकता है। एआई आधारित सिस्टम ग्राहकों के वित्तीय लेन-देन, खर्च और भुगतान की आदतों का विश्लेषण कर सकते हैं, जिससे बैंक को ग्राहक की वर्तमान और भविष्य की वित्तीय स्थिति का अंदाजा हो सकता है। इस डेटा का उपयोग करके बैंक ग्राहकों को व्यक्तिगत ऋण पुनर्संरचना योजनाएं पेश कर सकते हैं, जिससे एनपीए की समस्या को हल किया जा सके। ऋण पुनर्संरचना में, एआई उस राशि का आकलन कर सकता है जिसे ग्राहक आराम से चुका सकता है और इसके आधार पर भुगतान की नई शर्तें सुझा सकता है। इसके अलावा, एआई ग्राहक की बदलती वित्तीय स्थिति के आधार पर भविष्य में आवश्यक सुधार भी कर सकता है, जिससे एनपीए की स्थिति बनने से रोकी जा सके। यह प्रक्रिया न केवल बैंक के लिए लाभदायक है, बल्कि ग्राहकों को भी राहत प्रदान करती है।

3. प्रभावी ऋण संग्रह के लिए एआई टूल्स का उपयोग

ऋण वसूली एक जटिल और संवेदनशील प्रक्रिया होती है, जिसमें बैंक को न केवल प्रभावी रणनीति अपनानी पड़ती है, बल्कि ग्राहक संबंधों को भी बनाए रखना होता है। एआई का उपयोग इस प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाने के लिए किया जा सकता है। एआई आधारित ऋण वसूली टूल्स बकाया राशि की वसूली के लिए सबसे उपयुक्त समय और तरीका सुझाते हैं। उदाहरण के लिए, एआई एल्गोरिदम यह पहचान सकते हैं कि कौन सा ग्राहक किस प्रकार की संचार शैली का बेहतर जवाब देगा, जैसे कि ईमेल, फोन कॉल, या एसएमएस। इसके अलावा, एआई यह भी सुझाव दे सकता है कि किस

समय पर संपर्क करना सबसे अधिक प्रभावी होगा। यह व्यक्तिगत और डेटा-चालित दृष्टिकोण न केवल वसूली की सफलता दर को बढ़ाता है, बल्कि ग्राहक अनुभव को भी बेहतर बनाता है।

4. कानूनी कार्रवाई और नीलामी प्रक्रिया में एआई का उपयोग

यदि परंपरागत माध्यमों से ऋण की वसूली संभव नहीं होती है, तो बैंक को कानूनी कार्रवाई का सहारा लेना पड़ता है। इस प्रक्रिया में, एआई कानूनी दस्तावेजों के विश्लेषण, केस लॉ और अन्य कानूनी जानकारी का अध्ययन कर सकता है, जिससे बैंक के लिए सही और तेज निर्णय लेना संभव हो जाता है। इसके अलावा, एआई नीलामी प्रक्रिया को भी अधिक प्रभावी बना सकता है। आस्तियों की नीलामी में एआई का उपयोग करके संभावित बोलीदाताओं की पहचान की जा सकती है, संपत्ति के सही मूल्य का आकलन किया जा सकता है, और नीलामी प्रक्रिया को पारदर्शी और कुशल बनाया जा सकता है। इससे न केवल संपत्ति की उचित कीमत मिलती है, बल्कि वसूली की प्रक्रिया भी तेज होती है।

5. डेटा एनालिटिक्स और जोखिम प्रबंधन

एआई का एक प्रमुख लाभ यह है कि यह बड़े पैमाने पर डेटा का विश्लेषण कर सकता है और इससे प्राप्त अंतर्दृष्टियों का उपयोग कर सकता है। बैंकिंग क्षेत्र में, एआई का उपयोग जोखिम प्रबंधन के लिए भी किया जा सकता है। एआई आधारित एनालिटिक्स सिस्टम बैंकों को उनके ऋण पोर्टफोलियो के जोखिम का आकलन करने में मदद करते हैं और जोखिम को कम करने के लिए आवश्यक कदम सुझाते हैं। एनपीए वसूली के संदर्भ में, एआई उन ऋण खातों की पहचान कर सकता है जो उच्च जोखिम वाले हैं और जिन्हें तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके अलावा, एआई पिछले एनपीए मामलों का विश्लेषण कर उन कारकों को पहचान सकता है जो एनपीए बनने की संभावना को बढ़ाते हैं। इस जानकारी के आधार पर, बैंक अपने ऋण वितरण प्रक्रियाओं में

सुधार कर सकते हैं और जोखिम को कम कर सकते हैं।

6. भविष्यवाणी और निवारण उपाय

एआई का उपयोग न केवल मौजूदा एनपीए की वसूली में किया जा सकता है, बल्कि भविष्य में एनपीए बनने से रोकने के लिए भी किया जा सकता है। एआई एल्गोरिदम का उपयोग कर बैंक भविष्यवाणी कर सकते हैं कि कौन से ऋण एनपीए में बदल सकते हैं और इसके लिए निवारण उपायों की सिफारिश कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी ग्राहक की वित्तीय स्थिति कमजोर हो रही है, तो एआई बैंक को सलाह दे सकता है कि वे उस ग्राहक को अतिरिक्त समर्थन प्रदान करें, जैसे कि ऋण पुनर्संरचना या अन्य वित्तीय सहायता। यह निवारण उपाय एनपीए की संख्या को कम करने में सहायक हो सकते हैं।

7. एआई द्वारा संचालित निर्णय लेने की प्रक्रिया

एनपीए की वसूली में निर्णय लेने की प्रक्रिया बहुत महत्वपूर्ण होती है। एआई बैंकिंग पेशेवरों को डेटा-संचालित अंतर्दृष्टि प्रदान करके अधिक सटीक और तेज निर्णय लेने में मदद कर सकता है। यह एल्गोरिदम संभावित वसूली के लिए विभिन्न रणनीतियों का मूल्यांकन कर सकता है और सबसे प्रभावी रणनीति की सिफारिश कर सकता है। इसके अलावा, एआई का उपयोग भविष्य में निर्णय लेने के लिए एक गाइड के रूप में भी किया जा सकता है। पिछले एनपीए मामलों के डेटा का अध्ययन करके, एआई यह पहचान सकता है कि किन रणनीतियों ने सबसे अच्छा काम किया और किन्हें सुधार की आवश्यकता है। इस तरह, बैंक अपने अनुभव से सीख सकते हैं और भविष्य में बेहतर रणनीति अपना सकते हैं।

8. एआई का नैतिक और पारदर्शी उपयोग

हालांकि एआई एनपीए वसूली में अत्यधिक प्रभावी है, लेकिन इसके नैतिक और पारदर्शी उपयोग को सुनिश्चित करना भी महत्वपूर्ण है। एआई सिस्टम्स को इस प्रकार डिजाइन किया जाना चाहिए कि वे पारदर्शी और निष्पक्ष

हों। ग्राहकों के डेटा का उपयोग करते समय गोपनीयता और सुरक्षा को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। एआई का नैतिक उपयोग न केवल ग्राहकों का विश्वास बनाए रखने में मदद करेगा, बल्कि यह बैंक की साख को भी मजबूत करेगा। इसके लिए, बैंकों को एआई के उपयोग के लिए स्पष्ट नीतियाँ और दिशानिर्देश तैयार करने चाहिए और इसका पालन सुनिश्चित करना चाहिए।

एनपीए वसूली में एआई का उपयोग बैंकिंग उद्योग के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण बन चुका है। इसके माध्यम से बैंक न केवल एनपीए की पहचान और वसूली में सुधार कर सकते हैं, बल्कि भविष्य में एनपीए बनने की संभावना को भी कम कर सकते हैं। एआई आधारित सिस्टम्स बैंकिंग प्रक्रिया को अधिक कुशल, तेज, और प्रभावी बनाते हैं, जिससे बैंक को बड़े नुकसान से बचाया जा सकता है। हालांकि, एआई का उपयोग करते समय इसके नैतिक और पारदर्शी उपयोग पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। इस प्रकार, एआई का सही और प्रभावी उपयोग बैंकों को एनपीए की समस्या से निपटने में सक्षम बना सकता है, जो अंततः बैंकिंग प्रणाली की स्थिरता और सुरक्षा को मजबूत करेगा।

एनपीए मुद्दे का समाधान भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिरता और विकास के लिए महत्वपूर्ण है। एनपीए के प्रभावी प्रबंधन के लिए निरंतर निगरानी, मजबूत क्रेडिट मूल्यांकन, उचित नीति ढांचे और मजबूत कानूनी तंत्र की आवश्यकता होती है। आरबीआई और सरकार द्वारा उठाए गए कदम एनपीए संकट को हल करने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति हैं। हालाँकि, इसकी पुनरावृत्ति को रोकने और एक लचीला बैंकिंग क्षेत्र सुनिश्चित करने के लिए निरंतर प्रयास आवश्यक हैं।

अरविंद कुमार

मुख्य प्रबन्धक

एस एम ई सी सी - गया



मन का मर्म



“मन की भावुकता ही समझ की कुंजी है, हमारे जहन में यह गहराई तक उतरी होती हैं। भावुकता जितनी प्रगाढ़ होती है, अनुभव उतनी ही अधिक समझ संजोने वाला होता है। मन की अंतरंगता और गहनता को समझ पाना दूभर है और उससे भी अधिक कठिन है उसे नियंत्रित कर पाना। प्रसिद्ध मार्केटिंग एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषक गिल्बर्ट क्लोटेयर रैपेल का मत है कि हमारे जीवन के शुरुआती अनुभव उत्पादों, विचारों के साथ जुड़ाव स्थापित करते हैं जो हमारे व्यवहार एवं चयन को प्रभावित करता है।”

1990 के दशक की एक घटना है जब दुनिया की एक प्रमुख जीप निर्माता कंपनी क्रिसलर ने अपने मॉडल में बड़े सुविधाजनक, शानदार बदलाव किए लेकिन फिर

भी वह अपने खोए हुए वर्चस्व को पाने के लिए संघर्ष कर रही थी। कभी यह दुनिया की सबसे सफल एसयूवी हुआ करती थी। कंपनी के प्रबंधन ने मार्केटिंग में सब तरीके आजमाए और उनका उत्पाद भी बाज़ार में सबसे बेहतरीन था लेकिन फिर भी बिक्री उत्साहजनक नहीं थी। कंपनी के लोगों को समझ नहीं आ रहा था कि आखिर कारण क्या है। ग्राहकों का फीडबैक भी बहुत अच्छा था लेकिन यह उनके मन को लुभा नहीं पा रही थी। कंपनी को लगा कि उन्हें कुछ बदलाव करने की जरूरत है लेकिन क्या और कहाँ यह समझ नहीं आ रहा था, तो उन्होंने एक उपभोक्ता व्यवहार विशेषज्ञ क्लोटेयर रैपेल को सलाहकार नियुक्त किया। क्लोटेयर ने अपने तरीके से कुछ सर्वे किए जो कंपनी के नजरिए से अजीबोगरीब थे। क्लोटेयर रैपेल ने पुराने उपभोक्ताओं की भावनाओं को लक्षित करके जानकारी इकट्ठा की। जीप के बारे में उनके अनुभव थे, जो खुले मैदान में दौड़ती थीं, उन जगहों पर पहुँच जाती थीं जिन्हें कोई साधारण कार छू नहीं सकती थी, स्वतंत्र रूप से सवारी का साधन थीं, और इस तरह लोगों ने इसे एक जानवर घोड़े से जोड़ रखा था और घोड़ों में मुलायम चमड़े की सीटें नहीं होतीं, बल्कि उनके पास सख्त काठी होती है। पता चला कि उपभोक्ताओं को विलासिता नहीं चाहिए थी, उन्हें मजबूती चाहिए थी। क्लोटेयर ने डिज़ाइन में कुछ छोटे-मोटे बदलाव किए जैसे चौकोर हेडलाइट्स को गोल हेडलाइट्स से बदलना, हटाने योग्य दरवाज़े लगाना और ड्राइवरों को हवा का एहसास कराने के लिए खुला

टॉप लगाना और इस तरह रैंगलर की बिक्री बढ़ी और इसका नया 'चेहरा' इसकी सबसे प्रमुख और बिक्री योग्य विशेषता बन गया। क्रिसलर कार्यात्मकता पर काम कर रहा था, भावनाओं पर नहीं। उन्होंने रैंगलर को सिर्फ़ एक और नई एसयूवी में बदल दिया था। छोटे-छोटे बदलाव बड़े प्रभाव पैदा करते हैं। संत कबीर जी कहते हैं -

**“मन के हारे हार है मन के जीते जीत
कहे कबीर हारे पाइए मन ही की परतीत”**

अर्थात जीवन में जीत और हार केवल मन की भावनाएँ हैं यदि मनुष्य बिना परिश्रम किए शुरुआत में ही ये मान लेता है कि ये मुझसे नहीं हो पाएगा तो वह उसके लिए असंभव बन जाता है। यदि वह मान ले कि जीत उसकी ही होगी तो उसकी जीत की संभावना बढ़ जाती है। इंसान जब खुद को कमजोर, असहाय महसूस करने लगता है तो निराशा उसे घेर लेती और उसकी क्षमताओं पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। मानसिक रूप से प्रबल व्यक्ति हमेशा आगे बढ़ने की बात सोचता है, उसके लिए नसीब, भाग्य जैसी बातें सिर्फ़ शब्द मात्र होते हैं वे निराशा में भी आशा की किरण खोज लेते हैं एवम उनके लिए हर वक़्त शुरुआत का वक़्त होता है। सुनने में साधारण सा लगने वाला कबीर जी का यह दोहा वास्तव में इस असाधारण सत्य को उजागर करता है और वह है हमारा आत्मबल। देखा जाए तो हमारा जीवन अनेक प्रकार की व्याधियों एवम संघर्षों से भरा होता है जिसमें सुख-दुख, आशा-निराशा और हार-जीत इत्यादि के अनेक रूप समाहित होते हैं किन्तु वास्तव में मनुष्य के हार एवम जीत उसके मन पर आधारित है। मन शब्द जितना छोटा है इसका अर्थ उतना ही गहरा है जैसे महासागर उपर से शांत दिखाई देता है लेकिन अगर गहराई में जाएँ तो उसका अंत दिखाई नहीं देता। ऐसे ही हमारा मन है जो हमेशा विचार उत्पन्न करता

रहता है जिसमें हमारे जीवन का पतन करने और उत्थान करने की अनंत संभावनाएँ होती हैं। महाभारत में श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा था

**“जिसने मन को जीत लिया,
उसके लिए मन ही सर्वश्रेष्ठ मित्र है
किंतु जो ऐसा नहीं कर पाया उसके लिए
उसका मन सबसे बड़ा शत्रु बन जाता है”**

हमारे जीवन का संचालन हमारे मस्तिष्क द्वारा होता है तथा मन का सीधा संबंध हमारे मस्तिष्क से ही होता है क्योंकि मन में हम जिस विचारधारा को धारण करते हैं हमारा शरीर उसी का अनुसरण करता है। विश्व के कई लोगों ने अपने मन को जीत कर पूरी दुनिया को जीता है। ऐसी शख्सियतों में से एक नाम आता है स्टीफन हॉकिंग का। विश्व प्रसिद्ध व महान भौतिक वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग को किसी परिचय की जरूरत नहीं है। इन्होंने अपने काबिलियत से पूरी दुनियाँ को प्रभावित किया है। अपनी शारीरिक अपंगता से लड़कर इन्होंने वो हर चीज पाई जिसकी लोग बस कल्पना ही कर सकते हैं। अनेक ऐसी खोजों की जो नामुमकिन सी लगती थी। वो कहते थे

**“मुझे मौत से कोई डर नहीं लगता, लेकिन मुझे
मरने की भी कोई जल्दी नहीं है क्योंकि मरने से
पहले जिंदगी में बहुत कुछ करना बाकी है”**

स्टीफन हॉकिंग के शरीर का कोई भी अंग काम नहीं करता था, वे चल भी नहीं सकते थे। वे कुछ कर ही नहीं सकते थे लेकिन फिर भी जीना चाहते थे। उनका कहना था कि मृत्यु तो निश्चित है लेकिन जन्म और मृत्यु के बीच कैसे जीना है वह हम पर निर्भर करता है। चाहे जिंदगी कितनी भी कठिन क्यों न हो, आप कुछ न कुछ जरूर कर सकते हो और सफल हो सकते हो। स्टीफन

हॉकिंग का जन्म 8 जनवरी 1942 को इंग्लैंड में हुआ था। वे बचपन से ही काफी बुद्धिमान थे। 17 वर्ष की उम्र में इन्होंने ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी में प्रवेश लिया। ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी में पढ़ाई के दौरान उन्हें अपने दैनिक कार्य करने में दिक्कत आने लगी थीं। एक बार स्टीफन हॉकिंग छुट्टियां बिताने अपने घर आएँ थे तभी उन्हें चक्कर आने के बाद सीढ़ियों से गिर गए और वे बेहोश हो गए थे। ऐसा बार-बार होने के पश्चात जब जाँच कराई तब पता चला कि उन्हें कभी न ठीक होने वाली बीमारी है जिसका नाम - न्यूरोन मोटर रोग था। इस बीमारी में मांसपेशियों को नियंत्रित करने वाली सभी नसें धीरे-धीरे काम करना बंद कर देती हैं जिससे शरीर अपंग हो जाता है। सभी अंग काम करना बंद कर देते हैं। डॉक्टर का कहना था कि अब स्टीफन सिर्फ दो साल ही जी सकते हैं क्योंकि अगले दो साल में उनका सारा शरीर धीरे-धीरे काम करना बंद कर देगा। स्टीफन को भी इससे बड़ा सदमा लगा लेकिन इन्होंने कहा कि मैं ऐसे नहीं मर सकता। मुझे जीवन में अभी बहुत कुछ करना है। इन्होंने अपने बीमारी को दरकिनार करके, अपनी समस्याओं को छोड़कर अपने वैज्ञानिक सफर को शुरू किया और अपने आप को पूरी तरह विज्ञान को समर्पित कर दिया। धीरे-धीरे उनकी प्रसिद्धि पूरी दुनिया में फैल गई। उन्होंने अपनी बीमारी को एक वरदान मान लिया था। धीरे-धीरे आगे चल कर स्टीफन हॉकिंग का सारा शरीर काम करना बंद कर गया लेकिन उस बीमारी का एक प्लस प्वाइंट था कि उस बीमारी से स्टीफन हॉकिंग सिर्फ शारीरिक रूप से अपंग हो रहे थे न कि मानसिक रूप से। उसके बाद लोग यूँही देखते चले गये और स्टीफन हॉकिंग मौत को मात पे मात दे रहे थे। उन्होंने ब्लैक होल का कान्सेप्ट एवम हॉकिंग विकिरण का महान विचार दुनिया को दिया। स्टीफन हॉकिंग ऐसा नाम है जिसने शारीरिक

रूप से अपंग होने के बावजूद अपने आत्मबल से विश्व का सबसे अनूठा वैज्ञानिक बन कर दिखाया है। अपने जीने की इच्छा शक्ति के बदौलत इन्होंने मृत्यु को हरा दिया। वे दिव्यांग जरूर हुए थे लेकिन वे 76 वर्ष जिए। इन्होंने अपने स्पीच सिंथेसाइजर की मदद से बहुत सारी किताबें लिखीं जिसमें से एक किताब थी 'ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ टाइम' और जिसने रिकॉर्ड की झड़ियां लगा दी तथा पूरी दुनिया में 1 करोड़ से ज्यादा प्रतियां बिकीं।

कई बार प्रयास करने के बावजूद भी इंसान को पराजय का सामना करना पड़ता है लेकिन उसे हताश हुए बिना निरंतर प्रयास करने के साथ अपने मन में दृढ़ संकल्प लेना होगा कि एक दिन जीत हमारी ही होगी। मन की दृढ़ता के कारण कई लोगों ने जीत हासिल की है। जिनके अनेकों उदाहरण हैं। महाभारत के युद्ध में पांडवों की जीत का कारण यही था कि श्रीकृष्ण ने उनके मनोबल को दृढ़ कर दिया था। सावित्री के मन ने यमराज के सामने भी हार नहीं मानी और अंत में अपने पति को मौत के मुँह से बाहर निकाल लाई। छत्रपति शिवाजी महाराज ने अपने छोटी सी सेना के बल पर औरंगजेब को परास्त किया था। गाँधी जी ने अपने दृढ़ संकल्प से ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला दी थी और अंग्रेजों को भारत छोड़ कर जाना पड़ा। इस प्रकार के कितने ही उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं जिससे यह बात स्पष्ट होता है कि हार-जीत मन कि दृढ़ता पर निर्भर करता है।

**जीत और हार इस बात पर निर्भर करती है
मान लो तो हार है और ठान लो तो जीत**

पवनजीत कुमार
प्रबंधक (निगमित सेवाएँ विभाग)
मुंबई उत्तर अंचल



शाखा बैंकिंग बनाम आभासी बैंकिंग

“आभासी वास्तविकता (वर्चुअल रिएलिटी) की सबसे बड़ी समस्या यह है कि वह अभिविन्यास (ओरिएंटेशन) का मौका नहीं देती। हम स्वयं के अभिविन्यास का संदर्भ खो चुके हैं। -पॉल विरिलिओ, फ्रांसीसी लेखक एवं दार्शनिक”

मानव-मन-मस्तिष्क आदिम युग से ही कल्पनाशक्ति का धनी रहा है। प्राचीन काल से ही जब चिंतनशील मनुष्य असल जीवन से उकता जाता था, तब परिकथा की एक काल्पनिक दुनिया में नित नयी कहानियों और महाकाव्यों की रचना करके लोगों को एक अनदेखे आभासी जगत में ले जाता था। चाहे भारत में पंचतंत्र की कथाएँ हो या अरब की ‘अरेबीयन नाइट’ या फिर यूरोप की किंवदंतियाँ, ये सभी एक विकसित मस्तिष्क की उपज है और इन सभी ने अपने-अपने समय के लोगों की अवधारणाओं को आकार देने का काम किया है। सूचना-प्रौद्योगिकी के विकास ने आज हमें एक ऐसी ही कम्प्यूटर निर्मित आभासी दुनिया से दो-चार कराया है, जो हमें और हमारे रोज़मर्रा के जीवन को धीरे-धीरे बदलती जा रही हैं। इसके प्रभाव से समाज का कोई वर्ग अथवा जीवन का कोई अंग अछूता नहीं बचा है। बच्चे खेल-कूद से दूर होकर ‘कम्प्यूटर-गेम्स’ में मशगूल हो रहे हैं और बड़े-बूढ़े सामाजिक क्रियाकलाप और आपसी मेलजोल से दूर होकर ‘सोशल-नेटवर्क’ के मुरीद हो गए हैं। इस अद्भुत उभरते हुये घटनाक्रम ने हमारे सोचने की शक्ति और शैली दोनों पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। आभासी दुनिया की चौंधिया देने वाली गति ने हमारे शांत और मद्धम सामाजार्थिक परिप्रेक्ष्य को बदल कर रख दिया है।

शायद यही हमारा भविष्य है और कदाचित यही मानव सभ्यता का नया ‘संदर्भ बिन्दु’ भी है।

आभासी दुनिया से हमारा बैंकिंग क्षेत्र भी अछूता नहीं रह सकता था। भारी-भारी बही खातों में सिमटी भारतीय बैंकिंग-व्यवस्था के तार 1980 के दशक में अमेरिका और यूरोप की तरह “ऑनलाइन” व्यवस्था से जुड़ने लगे। इसी दशक में 24/7 कभी भी पैसा निकालने की सहूलियत के साथ एटीएम मशीन ने दुनिया में अपने पाँव जमाने शुरू कर दिये थे। बीसवीं सदी के अंतिम दशक तक विकसित देशों में बैंक जाने की ज़रूरत क्रमशः कम होती गयी और नयी सहस्राब्दी आते-आते भारत जैसे देशों ने भी इसका स्वाद चखना शुरू कर ही दिया। धीरे-धीरे आभासी बैंकिंग के प्रति दुविधा का भाव भी समाप्त हो चुका है और आज हम पूर्णतः ‘डिजिटल आंदोलन’ की गोद में हैं।

दुनिया की सबसे पहली ‘वर्चुअल बैंकिंग’ अमेरिका के 4 बड़े बैंकों- सिटी बैंक, चेस बैंक, केमिकल बैंक और हनोवर बैंक ने शुरू की थी। तब इसे ‘घर बैठे बैंकिंग’ के रूप में प्रस्तुत किया गया लेकिन उस समय इसे सीमित सफलता ही मिल पायी। 90 के दशक में ‘वर्ल्ड वाइड वेब(WWW)’ के आने से इसके प्रचार-प्रसार में सहूलियत होने लगी। आज खाते में शेष राशि की जानकारी से लेकर ऋण लेने तक की सारी प्रक्रिया की जानकारी ऑनलाइन उपलब्ध है। ध्यान देने वाली बात यह है कि 90 के दशक के अधिकांश समय तक इंटरनेट और नगदी-रहित बैंकिंग विकसित देशों में भी लोगों का उत्साह नहीं जगा सकी थी। अधिकांश लोग उस समय भी शाखा से बैंकिंग सुविधा लेना पसंद करते थे। धीरे-धीरे ई-कॉमर्स में आयी

तेज़ी के चलते नयी सहस्राब्दी ने ऑनलाइन भुगतान को लोगों के बीच स्वीकार्य बना दिया और तब से लेकर आज तक 'इंटरनेट-बैंकिंग' और ई-कॉमर्स ने कंधे से कंधा मिलाकर इस नयी व्यवस्था को सफलता के शिखर तक पहुंचा दिया है। साथ ही 'मोबाइल-क्रांति' और स्मार्ट फोन की तकनीक में आयी तेज़ी ने बैंकिंग को कम्प्यूटर के पर्दे से उठाकर मोबाइल के छोटे-से पर्दे में उतार लिया और बैंकिंग-व्यवस्था सहज रूप से लोगों के जेब में समा गयी।

ऐसे में प्रश्न यह उठता है कि क्या चाहर-दीवारी के भीतर लकड़ी की मेज़ के उस पार बैठे आदमी की उपयोगिता आज समाप्त हो चुकी है?

उपरोक्त प्रश्न का उत्तर सीधा-सपाट नहीं हो सकता।

मानव सभ्यता और मनोविज्ञान की तरह ही इस प्रश्न का उत्तर भी जटिलताओं से भरा है। इस विषय पर चर्चा करने से पहले हमें बैंकिंग-व्यवस्था के इतिहास को समझना होगा। माना जाता है कि तीसरी शताब्दी कृष्टाब्ध में प्राचीन फारस में वित्तीय संस्थाओं ने "सक्ख" नामक बॉन्ड चालू किए, जिन्हें व्यापार के लिए मुद्रा के विनिमय के बगैर इस्तेमाल किया जा सकता था। इसी से "चेक" शब्द की उत्पत्ति हुई। 11वीं शताब्दी में जब यूरोप के देशों में अंतर-देशीय कारोबार बढ़ने लगा तब वहाँ के प्रमुख शहरों के बैंक दूर-दराज के शहरों में अपने दफ्तर बनाने लगे। यहीं से शाखा-बैंकिंग की शुरुआत होती है, जो आज के इस बदलते युग में भी भली-भांति फल-फूल रही है। आज भी दुनिया के अधिकतर व्यावसायिक और निजी लेन-देन बैंक शाखाओं से ही सम्पन्न किए जाते हैं और कदम-कदम पर आज भी बैंक-सेवा में मानवीय उपस्थिति ही प्रधान है। भारत में प्राचीन युग से महाजनी-प्रथा चलती रही है और यूरोप से आयी बैंक-व्यवस्था पिछले लगभग 300 सालों से सफलतापूर्वक अपने पाँव जमा चुकी है। भारतीय बैंकिंग व्यवस्था में करीब 1.50

लाख बैंक शाखाओं में 15 लाख से भी अधिक कर्मचारी जनसेवा में लगे हुये हैं। बैंक-राष्ट्रीयकरण के बाद भारत में जनोन्मुखी सेवाएँ प्रदान करने में इन 1.50 लाख से अधिक शाखाओं का योगदान अग्रणी रहा है। शाखा बैंकिंग व्यवस्था के योगदान से ऐसा नहीं प्रतीत होता कि ये हमारे जीवनकाल में ही समाप्त हो सकती है। परंतु आने वाली पीढ़ी की सोच और बर्ताव में दर्ज किए जाने वाले परिवर्तनों के मद्देनजर यह अंदाज़ा लगाया जाने लगा है कि यह सदी शायद आभासी बैंकिंग की शाखा-बैंकिंग पर विजय की सदी होगी। इसके मुकाबले आभासी बैंकिंग का विकास पिछले 30 वर्षों में कम्प्यूटर और इंटरनेट तकनीक में आए बड़े बदलाव के कारण हुआ। काफी कम समय में ही शाखा बैंकिंग की बनिस्पत आभासी बैंकिंग ने अपनी अलग जगह बना ली। यह सबकुछ इतनी जल्दी हुआ कि अब उपरोक्त प्रश्न का उठना लाज़मी हो गया है। इसके लिए हमें आभासी बैंकिंग से मिलने वाली सुविधाओं का शाखा में होने वाली पारंपरिक बैंकिंग से तुलना तो करनी ही होगी साथ ही शाखा-बैंकिंग के बनिस्पत होने वाले फायदे और नुकसान का भी आंकलन करना भी आवश्यक हो जाता है।

फायदे बहुत हैं। बैंक में निश्चित समय से पहले या बाद में पैसे की जमा अथवा निकासी करना संभव नहीं, जबकि एटीएम या इंटरनेट बैंकिंग सेवा के माध्यम से दुनिया में कहीं भी और कभी भी पैसे का लेन-देन किया जा सकता है। ये सेवाएँ त्वरित होती हैं और इसकी बैंक कर्मचारी की कार्यकुशलता पर कोई निर्भरता भी नहीं होती। इन सेवाओं को प्राप्त करने के लिए घर या दफ्तर छोड़ कर कहीं जाने की ज़रूरत भी नहीं पड़ती। समयाभाव से जूझते जन-समाज के लिए बिजली की गति से होने वाले वित्तीय लेन-देन से बेहतर शायद कुछ और हो भी नहीं सकता। बैंक के लिए भी इसके फायदे बहुत हैं। आभासी बैंकिंग ने शाखा और मानव-संसाधन पर होने वाली लागत को

एक झटके में बहुत कम कर दिया है। किसी भी व्यक्ति को ऋण देने या न देने का निर्णय केवल अंदाजे या अनुमान के आधार पर लेने की बजाय उसकी “ऑनलाइन क्रेडिट रेटिंग” का पिछला ब्योरा देख लेने भर से आसानी से हो सकता है। दूर-दराज़ के इलाके जहाँ बैंक-शाखा खोलने में दिक्कत पेश आती है, वहाँ अधिक से अधिक पिछड़े एवं गरीब लोगों तक बैंकिंग सुविधा कम से कम खर्च में पहुंचा देने का काम भी संभव हुआ है। इसका उदाहरण भारत में ही ‘जन-धन योजना’ की विपुल सफलता से साफ ज़ाहिर होता है।

हलांकि इस चमकते हुए खूबसूरत सिक्के का एक दूसरा पहलू भी है। ‘इंटरनेट वर्ल्ड स्टैट’ नामक एक सर्वे कंपनी के मुताबिक 2017 के अंत में दुनिया की लगभग 34% से भी अधिक जनसंख्या इंटरनेट की उपलब्धता और कम्प्यूटर शिक्षा के अभाव में आभासी बैंकिंग से जुड़ने में असमर्थ है। ये जनसंख्या 2.5 अरब लोगों से भी अधिक की आँकी जा रही है। इसी सर्वे के अनुसार भारत की ५५.३% आबादी इंटरनेट के नियमित उपयोग से वंचित हैं। इतनी विपुल संख्या को नज़रअंदाज़ करके बैंकिंग व्यवस्था से शाखा द्वारा की गयी बैंकिंग को अगर धीरे-धीरे हटा लिया गया तो वित्तीय-समावेशन, सामाजिक न्याय और गरीबी-उन्मूलन के वैश्विक लक्ष्य कभी पूरे नहीं हो सकते। कई महत्वपूर्ण फैसले जैसे मानव संसाधन, ऋण की स्वीकृति, बैंक गैरेंटी निर्गमन, ट्रेज़री विभाग द्वारा विदेशी मुद्रा की खरीद-फरोख्त, ग्राहकों की शिकायत दर्ज करना और उनका निवारण करने जैसे काम आभासी बैंकिंग द्वारा करना संभव नहीं हो सकते। इन चीज़ों लिए आज भी मानव-हस्तक्षेप की आवश्यकता को नकारा नहीं जा सकता। अब इसके मनोवैज्ञानिक पक्ष पर आते हैं। आज भी साधारण लोगों और वरिष्ठ नागरिकों का एक बड़ा तबका इंटरनेट की सुविधाओं से सम्पन्न होने के बावजूद बैंकिंग काम-काज के लिए

किसी कम्प्यूटर मशीन से संपर्क साधने की बजाय किसी इंसान से रूबरू होना अधिक पसंद करता है। मेरे पिताजी का उदाहरण लेते हुए मैं यह कह सकता हूँ कि भले ही ‘फेसबुक’ और ‘वाट्स-एप’ से ये लोग जुड़ गए हों, लेकिन बैंकिंग जैसे अति व्यक्तिगत और महत्वपूर्ण कार्य के लिए उन सबका आज भी मानव-मन की पेचीदगियों से अंजान एक संवेदनाहीन, आवेगहीन, “डिफ्रेंशियल इंजिन” से संवाद करना संभव नहीं। ‘कम्प्यूटर-क्रांति’ के आने से पहले वाली पीढ़ी के अधिकांश लोग आज भी यह मानते हैं कि इंसानी समस्याओं को समझने और उनका निराकरण करने के लिए इंसान से संवाद स्थापित करना महत्वपूर्ण है।

अब बात आती है ‘फिशिंग’ (phishing) की। जी नहीं, मछली को जाल में फाँसने वाली ‘फिशिंग’ (fishing) नहीं, इसके इतर यहाँ इशारा ऑनलाइन जालसाजों के जाल में भोले-भाले इन्सानों को फाँसने की ओर है। इस पद्धति में हैक़र, यानि कि कम्प्यूटर-विज्ञान में महारत प्राप्त आपराधिक-तत्व, किसी बैंक या अन्य किसी संस्था की वेबसाइट की नकल बना कर, अथवा ईमेल एवं एसएमएस (SMS) पर विभ्रान्त कर देने वाले संदेश भेज कर अंजान लोगों के पासवर्ड लूट लेते हैं और फिर उनके बैंक खातों में सेंध लगा डालते हैं।

सन 2016 में भारत के इतिहास की सबसे बड़ी बैंकिंग डिजिटल चोरी के खुलासे ने देश के प्रबुद्ध, शिक्षित एवं अर्ध-शिक्षित वर्ग को बड़ा झटका दिया। कई सरकारी और गैर-सरकारी बैंकों के करीब 32 लाख ग्राहकों के डेबिट कार्ड्स का डाटा यांत्रिक रूप से पेमेंट गेटवे में वाइरस के प्रयोग से चुरा लिया गया। इस बात की आशंकाएँ जताई जाने लगीं कि बैंकिंग व्यवस्था से लोगों का विश्वास उठ सकता है। भारी मात्रा में क्रेडिट कार्ड्स के डाटा की चोरी से करोड़ों रुपयों का नुकसान भी हुआ और ‘डिजिटल-सिक्योरिटी’ पर बहस भी शुरू हुई। यह ऐसा इकलौता माम

ला नहीं है। जून 2024 में प्रकाशित एक “टाइम्स ऑफ इंडिया” के लेख में ये उजागर आंकड़ों की माने तो देश में पिछले वित्तीय वर्ष में 1457 करोड़ रुपये की ऑनलाइन धोखाधड़ी के मामले पाये गए। आरबीआई (RBI) का मानना है कि हर घंटे देश में लगभग 3 से 4 लाख रुपये यांत्रिक रूप से चोरी कर लिए जाते हैं। लोग यह बात जान चुके हैं कि इंटरनेट के युग में आभासी बैंकिंग में भी पूर्ण सुरक्षा पाना असंभव है और डिजिटल चोरी का खतरा बना रहेगा। ऐसे समय में भौतिक आधारभूत संरचना वाली शाखाओं ने ही लाखों व्यग्र ग्राहकों की समस्याएँ सुनकर उनका निदान करने और बैंकिंग की साख बचाने में बड़ा महत्वपूर्ण योगदान दिया। जब आभासी बैंकिंग-व्यवस्था असफल होती है, तब लाखों लोगों को बैंक शाखाओं में जाकर अपनी व्यथा सुनाने और समाधान पाने की ही इच्छा होती है। कम्प्यूटर द्वारा उत्पन्न एवं स्वतः प्रेषित कोई भी संदेश ऐसी स्थिति में हालात को काबू में लाकर संस्थाओं पर जनता का विश्वास बहाल नहीं कर सकता।

अगर हमें यह लगता है कि विकासशील देश होने के कारण, सुरक्षा व्यवस्थाओं में कमी के चलते केवल भारत में ऐसा हुआ है, तो ऐसा सोचना ग़लत होगा। दुनिया की सबसे बड़ी महाशक्ति अमेरीका में ‘बाक़र्ल्यूस बैंक’ द्वारा किए एक सर्वे के मुताबिक़ दुनिया में क्रेडिट कार्ड्स और ऑनलाइन पासवर्ड चुराने का सालाना धंधा लगभग 24.71 अरब डॉलर का है और सन 2016 में इसका 47% हिस्सा अकेले अमेरीका का ही था। इतनी बड़ी राशि अगर किसी शाखा बैंकिंग-व्यवस्था से चुराने की कोशिश होती तो शायद कभी संभव नहीं हो पाती। यही नहीं, इलेक्ट्रॉनिक पेमेंट व्यवस्था चलाने वाली कंपनी एसीआई (अउख) के सन 2023 के अनुमान के मुताबिक पिछले साल में लगभग 19% अमेरिकी लोगों का क्रेडिट कार्ड एवं ऑनलाइन बैंकिंग डाटा किसी न किसी समय चोरी होने का अंदेशा है। अमेरिकी हो या भारतीय, या

फिर किसी भी देश का ही नागरिक क्यों न हों, क्या वह बैंक शाखा से 19% खातों में गड़बड़ी की कल्पना भी कर सकता है? यूरोप की कहानी भी इससे बहुत अलग नहीं है। अकेले सन 2021 में ही यूरोप में होने वाले कुल ऑनलाइन एवं कार्ड की धोखाधड़ी में चोरी गयी राशि 1.53 अरब यूरो के लगभग आँकी गयी है। इसमें भी विश्व की प्रथम श्रेणी की मानी जाने वाली अर्थव्यवस्थाओं और संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य फ़्रांस और ग्रेट-ब्रिटेन अव्वल स्थान प्राप्त करते हैं। साफ नज़र आता है कि भले ही कोई देश कितना ही सैन्य-समर्थ और आर्थिक शक्ति-सम्पन्न क्यों न हो, आभासी बैंकिंग दुनिया के अत्याधुनिक चोरों से निपटने में बड़े से बड़े देश नाकाम हुये हैं। साइबर अपराधियों के लिए आभासी बैंकिंग सोने की खदान जैसा बन गया है। इंटरनेट और कम्प्यूटर-विज्ञान की शिक्षा को लाखों लोग साइबर चोर बन कर पैसा बनाने में लगा रहे हैं। वही बैंक और सरकारें उनसे एक कदम आगे रहने की कोशिशों में लगी हुई हैं। एक होड़ सी मची है आगे निकलने की। उम्मीद यही की जानी चाहिए कि ‘साइबर सुरक्षा-व्यवस्था’ में वैश्विक स्तर पर व्यापक सुधार संभव हो सकें और इस प्रकार से वर्चुअल बैंकिंग को खोखला करने वाले इंटरनेट के महारथियों (साइबर अपराधियों) का काम असंभव-प्राय हो जाए।

उपरोक्त तर्कों से एक बात साफ होती है कि लाखों करोड़ों जीबी (GB) की कम्प्यूटिंग क्षमता ही अकेले शाखा-बैंकिंग को समाप्त करके पूर्ण रूप से वर्चुअल बैंकिंग को एकमात्र समाधान नहीं बना सकती। विडम्बना यह है कि इन दोनों तरह की बैंकिंग को एक दूसरे का पूरक होना चाहिए लेकिन अक्सर इन्हे एक दूसरे का प्रतिस्पर्धी माना लिया जाता है। सत्य तो यह है कि एक आभासी व्यवस्था तभी सुचारु रूप चल सकती है, जब उसके पीछे मानव-मस्तिष्क का समर्थन हो। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) पर हो रहे शोध से शायद आने वाली सदी में बैंकिंग और

अन्य क्षेत्रों में मानव हस्तक्षेप समाप्त हो जाएगा। और तब शायद बैंकिंग का स्वरूप भी आज जैसा न रहे। पर हमारे जीवनकाल में ऐसा होने की संभावनाएँ कम ही दिखाई देती हैं। आभासी बैंकिंग की सुविधाओं के साथ-साथ उसकी विफलताओं पर भी हमारा ध्यान होना चाहिए। दुनिया भर में लाखों- करोड़ों वित्तीय सुविधाओं से महसूस लोगों तक बैंकिंग की सहूलियत को सुरक्षित ढंग से पहुँचाने के लिए इसका उपयोग आवश्यक ही नहीं वरन अपरिहार्य भी है।

समय और तकनीक दिनोंदिन तेज़ी से बदल रहे हैं। मानव-श्रम का कम्प्यूटर की शक्ति से सीधा सामना हर उद्योग में देखा जा सकता है। चीज़ें इतनी तेज़ गति से बदलने लगी हैं कि बैंक में कार्यरत लोगों को और भी सजग हो कर आभासी बैंकिंग में महारत हासिल करने की ज़रूरत है। काल-चक्र को रोका नहीं जा सकता और ऐसा करने का प्रयास भी प्रगतिशील संस्कृति के लिए उचित नहीं है। बेजान कम्प्यूटर के पीछे बैठकर मानवीय संवेदनाओं के साथ सेवा प्रदान करने वाले लोगों की आवश्यकता आज भी है और आने वाले समय में भी बनी रहेगी। चाहरदीवारी के भीतर लकड़ी की मेंज़ के उस पार का व्यक्ति आने वाले दिनों में भी ग्राहकों के जीवन का अभिन्न अंग बना रहने वाला है। बस ज़रूरत है, आज के बैंक कर्मचारियों की शाखा-बैंकिंग से आभासी बैंकिंग में होने वाले अभिविन्यास की, समायोजन-अनुकूलन एवं अनुस्थापन की। यही आने वाले दिनों में बैंकिंग परिप्रेक्ष्य का “संदर्भ बिन्दु” होगा।

कौस्तव साहा
प्रबंधन विकास संस्थान



सुबह

क्या होता है, जब सुबह होती है,
नई उमंगें, नई अंगड़ाइयाँ होती हैं।

कद छोटा और लंबी परछाइयाँ होती है,
ओस की नमी, कोयल की कूक होती है।

पूरे दिन की दिनचर्या बनाई जाती है।
काम बहुत हैं, यह बात बताई जाती है।

छोटे-छोटे कामों के लिए दिन बड़ा लगता है,
दिन का पहला प्रहर जैसे वक्त खड़ा लगता है।

दूजा प्रहर आते आते, परछाइयाँ छोटी होने लगती हैं,
आलस के आँगन में अब काम भी बोझिल सा लगता है।

साँझ ढले पर सोने से पहले, खुद से यही बात करेंगे,
आज नहीं हुआ तो क्या हुआ, कल फिर नई शुरुआत करेंगे।

सुश्री नीलम गुप्ता
पैगंबरपुर शाखा
सीवान अंचल, बिहार



A Banker story that is bound to inspire Millions

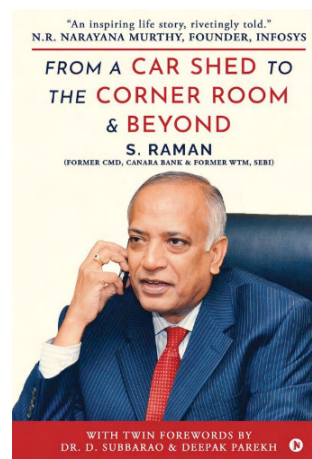
Recently I have gone through a very well-researched, thought-provoking and eye-opener book "From a Car shed to the Corner Room & Beyond" written by Sunder Rajan Raman a former CMD of Canara Bank. Executive Director of Union Bank of India and former WRM, SEBI. The book narrates the personal and professional journey of S. Raman in an honest and candid manner. A Post Graduate in Economics, Raman holds a Diploma in Business Management and a Senior Diploma in German Language, besides CAIIB from the Indian Institute of Bankers and ACIB from the Chartered Institute of Bankers, London. Raman joined the State Bank of India as a Clerk at 19, while not yet a graduate. On completing B.Com as a University Topper and Rank-Holder, he joined Bank of India at 21 as a Direct Recruit Officer where he spent 35 years across India, besides two stints abroad. Raman started with modest beginnings, living in a car shed for about 6 years of his childhood, before gradually rising to head Canara Bank, one of India's largest banks, where his father had served as a stenographer for more than three decades earlier.

The book exemplifies how a simple career path should be for an honest banker and in reality, how circumstances can stress test the person fully. I feel myself lucky that I got an opportunity to work with S. Raman when he was Zonal Manager in Bank of India – Ahmedabad Zone. Really he has shared the joys of success and sorrows of setbacks experienced in his personal as well as professional journey and the balance he had maintained during his successful tenure.

If you speak particularly of people involved in business endeavours across industries, we're often faced with constant pressure to perform at our best and achieve success, whether it's in our careers or our personal lives. It is rightly said that

Success is not how high you have climbed, but how you make a positive difference to the world. For S. Raman, Success isn't always about greatness. It's about consistency and consistent hard work has led to success and greatness. During his entire career, Raman's attitude was to go for hard choices that would lead to lasting benefits rather than going for easy options. His book is a well-crafted biography that vibrates with the universal themes of honest hard work and strong determination. On going through many chapters, one feels that Raman is a good story teller as he can turn a minor incident into a major vent, worthy of the attention of the unsuspecting reader.

It transports impactful leadership lessons through forthright language that encourages continuous reading. The book reveals the fact that hard work is about doing something that may not directly inspire you but that is necessary for you to achieve your goal. It really speaks of S Raman's professional learnings, including the tougher situations he has had to face. Some of these events tell of difficult times that the author faced personally. Despite the hardships, this book articulates his beliefs in spirituality and his truthful journey.



A book titled "From a Car Shed to the Corner Room & Beyond" is authored by S. Raman

The book offers a first-person account of Raman's remarkable journey from a clerk at SBI to becoming the Chairman and Managing Director of Canara Bank and a full-time Member of SEBI. The book travels the tricky dance between personal integrity, professional challenges, and systemic issues in the financial world.

Post retirement, Raman had to face some disastrous events. The way he faced there difficulties is an important part of the book, which essentially is the story of his professional and personal life, intertwined in a smooth and seamless way.

The author has very nicely depicted the transformative power of mentorship and the impact of meaningful relationships in his life's journey. The acumens can really help to enhance proficiency in business development, operations management, and administrative strategies. The book offers valuable insights into overcoming challenges, making it a motivational read for anyone aspiring to achieve their goals. It delivers impactful leadership lessons through straightforward language that encourages continuous reading. The book is useful not only for bankers but also for individuals with varied interests, given its broad applicability and engaging style. In his epilogue, the author rightly points out that "Positive thinking has ensured that all in our family have retained our optimism and confidence." There is no doubt that this book will be scratched as an inspiring and remarkable narrative for all of us.

Vinod Chandrashekhar Dixit
Senior Manager
FGMO - Ahmedabad



जीवनधारा

जीवन की आपाधापी में,
अपना सपना खोया सा लगता है।
रातों की नींद , दिन का चैन,
खोया सा लगता है।
अतिप्रिय भी जो लगता है,
उसका साथ भी खोया सा लगता है।
जीने का सलीका तो बदल दिया पर,
जीने का एहसास ही खोया सा लगता है।
सबकी खुशियों में शरीक तो होते हैं पर,
मन का साथ ही खोया सा लगता है।
साथ छूटना, उम्मीदों का टूटना,
ये सब ही तो जीवन है।
पर इस जीवन की किताब का,
कोई पन्ना खोया सा लगता है।
खुशी की चाह में मानो,
अपना वर्तमान खोया सा लगता है।
चाहते तो हैं उचाइयों को छूना पर,
अंबर का रास्ता ही खोया सा लगता है।
जीवन की राहों में मंजिल का,
निशां ही खोया सा लगता है।

बृजेश कुमार विश्वकर्मा
निरीक्षण एवं लेखा परीक्षा विभाग
वाराणसी आंचलिक कार्यालय



समय

मैं समय हूँ, कम ही किसी का हुआ,
जिसका हुआ उसे बना दिया,
जिसका न हुआ उसे गिरा दिया ।
सबने माना मुझे अपना,
पर जिसने जाना मुझे,
मैं सिर्फ उसका हुआ ।
उम्मीद के सहारे कुछ जिए,
तो कुछ की उम्मीद ही मैं रहा ।
कुछ को इतिहास में दर्ज कराया,
तो किसी को गुमनाम भी कराया ।
मैं समय हूँ, कम ही किसी का हुआ,
जिसने मुझे जाना और माना
मैं बस उसका रह पाया ।
जिसने जितनी मेहनत की,
मैं उतना ही उसे आगे ले पाया ।
समय के पहले न ही कुछ कोई पाया,
जिसकी जितनी इच्छा,
उसे उतना ही बस दे आया ।

विकास कुमार नामदेव
मुख्य प्रबंधक, ऋण
नासिक अंचल



शून्य से सिफर तक

ख्वाहिश थी समंदर से मिलन की
लहरों से खेलूं, किनारों पे जाऊं,
पर दरिया से निकली नहर हो गया,
तेरे इश्क में दरबंद हो गया।

चाहत थी मंजिल को पाने की,
खुशियां मनाऊं, तकरीरे सुनाऊं,
पर दौरेमंजिल में रहगुजर हो गया,
तेरे इश्क में दरबंद हो गया।

हसरत थी तेरा दीदार कर लूँ,
तुझे दिल में बसा लूँ, तुझे प्यार कर लूँ,
पर जो देख ना सके, वो नजर हो गया,
तेरे इश्क में दरबंद हो गया।

तमन्ना थी किताबों के पन्नों में आऊं,
तू मुझको पढ़े और मैं तुझको रिझाऊं,
पर अखबार के पन्नों में सिमटी खबर हो गया,
तेरे इश्क में दरबंद हो गया।

इरादे थे मुट्ठी में आसमां को भर लूँ,
सूरज से नजरे मिलाऊं, चाँद पर उतर लूँ,
पर शून्य से चला था सिफर तक गया,
तेरे इश्क में दरबंद हो गया।

श्री प्रभुदयाल सिंह
प्रबन्धक (विधि)
आंचलिक कार्यालय, लखनऊ



अर्थव्यवस्था के आस्था केंद्र - बैंक

दार्शनिक कहते हैं कि मनुष्य ने जब जीवन के रहस्य को समझना चाहा एवं अपने अस्तित्व पर प्रश्न किए तो उससे उपजी सामाजिक उत्कंठा के मानवीय प्रत्युत्तर स्वरूप ईश्वर की अवधारणा बनी, इस अवधारणा ने कालांतर में धर्म का रूप ले लिया। दर्शनशास्त्र के अनुसार लोगों का विश्वास ही धर्म का आधार है। एक ओर धर्म जहां सामाजिक आस्था का पर्याय है, वहीं बैंकिंग अर्थव्यवस्था की आस्था का पर्याय है। हालांकि व्यावहारिक दृष्टि से धर्म और बैंकिंग भिन्न हैं लेकिन सैद्धांतिक रूप से धर्म और बैंकिंग दोनों ही विश्वास, सुव्यवस्था और सुरक्षा का एक ढांचा उपलब्ध करवाते हैं - फिर भले वह आध्यात्मिक हो या भौतिक। ये दोनों ही प्रणालियाँ ऐसी मान्यताओं पर आधारित हैं जो लोगों को और समाज को भी अनिश्चितताओं के बीच स्थिरता की ओर ले जाती हैं।

एक जमाना वह भी था, जब बैंक से तात्पर्य केवल जमा स्वीकार करने अर्थात् एफ़डी, आरडी करवाने और बमुश्किल ऋण प्राप्त करने के केंद्र से ही था। परंतु नीतियों में परिवर्तन, शिक्षा के प्रसार और देश में इंटरनेट क्रान्ति आने के बाद अब बैंकिंग के पर्याय बहुत विस्तृत हो गए हैं। विगत वर्षों में भारत में शहरी क्षेत्रों के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी बैंकों के विस्तार ने, देश के चहुंमुखी विकास की संभावनाओं को जीवंत किया है। वर्तमान में आधुनिक बैंकिंग का स्वरूप बहुत व्यापक हो गया है। परम्परागत बैंकिंग के स्थान पर अब सामाजिक-आर्थिक बैंकिंग ने अपना विशिष्ट स्थान ग्रहण कर लिया है। आर्थिक गतिविधियों के अभूतपूर्व उन्नयन के कारण समाज निरंतर नये आयामों की ओर अग्रसर हो रहा है। साफ तौर पर कहा जाये तो बैंकिंग पर आमजन का विश्वास बढ़ने के कारण ही जनसंख्या के बड़े भाग का जीवन स्तर बेहतर हुआ है।

आर्थिक प्रगति की इस यात्रा में भारत में ग्राहकों के नये-नये वर्गों का उदय हुआ है। जिसके परिणास्वरूप बैंकों से न केवल अपेक्षाएं ही बढ़ी हैं अपितु अपेक्षाओं का

स्वरूप भी बदल गया है। अपनी अपेक्षाओं पर खरा उतरने के लिये बैंक अपने आधारभूत सिद्धांतों में नवीन रूपों का मिश्रण कर रहे हैं, जिससे बैंकों की कार्यप्रणाली में भी निरन्तर परिवर्तन आ रहा है। आज बैंक अपने परम्परागत कार्य, जमाओं के संग्रहण में विभिन्न योजनाओं के माध्यम से इसे बहुपयोगी सिद्ध करने की ओर प्रगतिशील हैं। जमा खातों के विभाजन में अब जमा राशियों की अवधि के स्थान पर जमाकर्ता की आवश्यकता के आधार को महत्व दिया जाने लगा है। बैंक अब ग्राहक को उनके महत्व की योजनाएं बताने लगे हैं। इन सभी परिवर्तनों के कारण भारत में बैंकिंग व्यवस्था अपने परम्परागत स्वरूप से निकलकर आधुनिक परिवेश में ढलती हुई प्रतीत हो रही है। यह ग्राहक और बैंक दोनों के लिहाज से बेहतर है। बाज़ारवाद की समकालीन धारणाओं के अनुसार अपना उत्पाद बेचने से पहले ग्राहक की यात्रा को समझना जरूरी है।

मशहूर लेखक केविन स्टीटर्ज का मानना है कि किसी भी कंपनी को पहले यह पता लगाना चाहिए कि ग्राहक की सर्वोपरि अपेक्षा क्या है, और फिर यह पता लगाओ कि आपकी कंपनी का सबसे बढ़िया उत्पाद क्या है। जहां पर दोनों एक-दूसरे से मिलते हैं उस बिन्दु पर फोकस करें। भारत की पिछले दशक की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि सरकार ने नागरिकों को योजनाओं के अप्रत्यक्ष लाभार्थी से परिवर्तित करके प्रत्यक्ष लाभार्थी बना दिया है। अब योजनाओं की राशि सीधे नागरिक के खाते में अंतरित हो जाती है। इसलिए बैंकिंग के माध्यम से ग्राहक अब सरकारी योजनाओं का लाभ भी उठाता है। चाहे वह किसी भी प्रकार की सब्सिडी हो या जनकल्याण वाली अन्य कोई सरकारी योजना हो। अब बैंक हर प्रकार से प्रत्यक्ष धनराशि अंतरण वाली सरकारी योजनाओं को लागू करने में समर्थ हैं।

देश के आर्थिक विकास में योगदान देने वाले प्रमुख क्षेत्रों जैसे- कृषि, उद्योग, व्यापार आदि की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विभिन्न बैंक स्थापित किये गये हैं। जो अपने

मार्गदर्शी सिद्धान्तों में निरन्तर नवीनता का मिश्रण कर रहे हैं। व्यवसायिक बैंक अपने कार्यों एवं उद्देश्यों की प्रकृति के अनुसार लाभ अर्जित करते हैं। अन्य व्यवसायिक संस्थाओं के समान इनका प्रमुख उद्देश्य विभिन्न क्रियाओं के निष्पादन के माध्यम से लाभार्जन कर अंशधारियों में वितरण करना होता है। इसके साथ साथ व्यवसायिक बैंक अपने प्रमुख एवं आधारभूत व्ययों के अन्तर्गत जन-साधारण की बचतों में जमाओं के रूप में संग्रहीत कर व्यावसायिक एवं औद्योगिक संस्थाओं तथा व्यक्तियों को उत्पादक कार्यों हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं। इस रूप में बैंकिंग संस्थाएँ ऋणी तथा ऋणदाता दोनों ही रूपों में कार्य करती हैं। इससे देश में आत्मनिर्भर भारत अभियान जैसी महत्वपूर्ण योजनाओं को बल मिलता है। इसके अतिरिक्त बैंकिंग संस्थाएं औद्योगिक प्रतिष्ठानों द्वारा निर्गमित विभिन्न प्रतिभूतियों में भी विनियोग कर उन्हें न केवल सामान्य अंश पूँजी प्रदान करती हैं अपितु लाभांश एवं ब्याज प्राप्त कर अपने कुल लाभों में भी वृद्धि करती हैं।

बैंकिंग संस्थाओं में जन-विश्वास निहित होता है तथा इसी आधार पर वे विशाल मात्रा में आर्थिक साधनों को संग्रहीत करने में सफलता प्राप्त करती हैं। अतः उन्हें पूँजी कोषों का विभिन्न क्षेत्रों एवं माध्यमों में विनियोग करते समय पूर्ण सतर्कता एवं सावधानी बरतनी पड़ती है। इसके अतिरिक्त बैंक को दूरदर्शिता एवं स्वविवेक का भी प्रयोग करना पड़ता है तथा कुछ निश्चित सिद्धान्तों की अनुपालना करनी पड़ती है। इन्हीं सिद्धान्तों को 'व्यापारिक बैंकिंग सिद्धान्त' की संज्ञा दी जाती है। बैंकों के आर्थिक साधनों का अधिकांश भाग समाज में विभिन्न वर्गों के व्यक्तियों एवं संस्थाओं से बैंक जमाओं के रूप में प्राप्त किया जाता है। इसलिए आज के समय में भारत का बैंकिंग सेक्टर अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। यह आमजन से लेकर शीर्षजन तक सभी को हरसंभव मदद उपलब्ध करवाता है।

वेद प्रकाश

प्रबंधक - एच आर एम एस
जयपुर आंचलिक कार्यालय



A flickering Street light!

That dark night, through forest drear,
I wandered lost, beset by fear.
The trees enshrouded, veiled in haze,
In darkness, I did drift and daze.

I couldn't see, no stars alight,
But then, a glimmer, small and bright,
The fireflies began to glow,
A sprinkling light in nightly show.

Was this the hope, a spark so rare?
A fleeting beacon in the air?
Perhaps it was, a subtle light,
To guide me through the endless night.

Awake, I found the dream had fled,
Yet visions of those lights still led,
The street lamps flickered, falsely bright,
Mistaken for the fireflies' flight.

Yet hope endured, though dream was gone,
A glimmer till the break of dawn,
For even in the darkest plight,
A spark of hope may kindle light.

Sangeeta Moharana,
Customer Service Associate,
Baramunda Branch,
Bhubneshwar Zone



एक पेड़ माँ के नाम / Ek Ped Maa Ke Naam



स्वतंत्रता दिवस / Independence Day



स्वतंत्रता दिवस / Independence Day



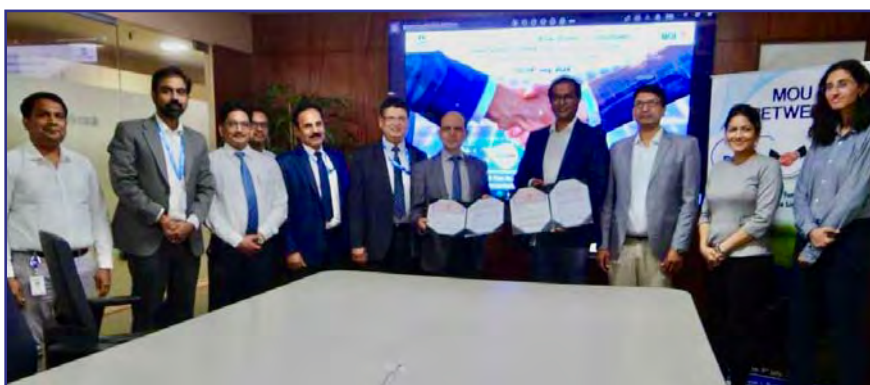
स्वच्छता अभियान / Swachata Abhiyan



स्वच्छता अभियान / Swachata Abhiyan



सम्मानित एमडी महोदय, कार्यकारी निदेशक महोदय और सभी मुख्य महाप्रबंधकों/महाप्रबंधकों और क्षेत्रीय प्रबंधकों की उपस्थिति में एमडीआई मुंबई में वाणिज्यिक वाहनों और उपकरणों के वित्तपोषण के लिए टाटा मोटर्स फाइनेंस और बीओआई के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।



बैंक ऑफ इंडिया ने रूफटॉप सोलर और ईवी चार्जिंग स्टेशनों की स्थापना में तेजी लाने के लिए आसान और किफायती वित्तपोषण प्रदान करने के लिए टाटा पावर सोलर के साथ साझेदारी की। मुख्य महाप्रबंधक श्री अशोक कुमार पाठक, महाप्रबंधक-एसएमई श्री कुलदीप जिंदल और अन्य की उपस्थिति में एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए।

Town Hall meeting During 1st HY 2024-25



Respected MD & CEO Sh. Rajneesh Karnatak addressed the staff members at TOWN HALL MEETING in Chandigarh.



Various CSR Activities undertaken during MD & CEO Visit to FGMO Chandigarh



The Managing Director & CEO of Bank of India Sri Rajneesh Karnatak, has paid an official visit to Bank's Visakhapatnam Zone on 17-09-2024 and as a part of the "CSR initiative" donated lifesaving medical equipment to King George Hospital, Visakhapatnam



Our Managing Director and Chief Executive Officer, Shri Rajneesh Karnatak visited Chennai, on Tuesday March 12th, 2024. As a part of Bank's activities under Corporate Social Responsibility, MD & CEO handed over a cheque of ₹ 5 lakhs to Ms Jayashree, Director of SPASTN



'Kisan Mela' was organized in the Indore Zone of Bank of India on the occasion of Agriculture Month on 19.07.2024 under the aegis of "Madhya Pradesh and Chhattisgarh FGMO" in the glorious presence of Our MD & CEO Shri Rajneesh Karnatak.



MD & CEO of Our Bank Shri Rajneesh Karnatak, has paid an official visit to Bank's Kanpur Zone on 02-09-2024 and a Town hall meeting was organised in his esteemed presence.

"Imagination is not only a powerful tool for creativity, but it is the gateway through which we glimpse future possibilities, painting the world with the colors of our potential before they ever materialize."

"Imagination is everything. It is the preview of life's coming attractions."

- Albert Einstein



Madhuri R.
Manager,
SKVK Navanagar,
Hubballi Dharwad Zone

